ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 04 नवम्बर 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 04 नवम्बर 2018 से 10 नवम्बर 2018

आश्विन कृ. – 04 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 44, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. अमृतसर द्वारा आर्य समाज लोहगढ़ में साप्ताहिक आर्य सत्संग व यज्ञ

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब के तत्वावधान में 07–10–2018 रविवार को साप्ताहिक आर्य सत्संग व यज्ञ श्रृंखला के अंतर्गत आर्य समाज, लोहगढ़ अमृतसर में सेवा, समर्पण व त्याग की प्रतिमूर्ति महात्मा आनंद स्वामी जी के पावन जन्म दिवस को समर्पित पावन आर्य सत्संग व यज्ञ संपन्न किया गया। जिसमें श्री ओ पी सोनी शिक्षा मन्त्री पंजाब मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित हुए। इस अवसर पर स्कूल के चेयरमैन डॉ. वी.पी. लखनपाल, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब की मन्त्री तथा क्षेत्रीय अधिकारी डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पंजाब जोन–ए प्रि. डॉ. नीलम कामरा उपस्थित थी। अतिथियों के साथ इस पावन यज्ञ में विद्यालय की छात्राओं ने पावन वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा आहुतियाँ अर्पित की। इस भव्य व आकर्षक पावन कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक, छात्र–छात्राएँ, अभिभावक तथा अन्य कर्मचारी सम्मिलित हुए। डी.ए.वी. सी सै. स्कूल हाथी गेट के प्रि. अजय बेरी कोषाध्यक्ष आर्य समाज लोहगढ़ व ए.पी.पी. उपसभा, पंजाब ने आए हुए गणमान्य अतिथियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। विद्यार्थियों द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन की सादगी समर्पण, सेवा भाव व त्याग की भावना को दर्शाती पावन गाथा का मधुर गायन प्रस्तुत किया गया, जिसे श्रवण कर समस्त श्रोतागण आनन्द विभोर हो गए। तत्पश्चात् महात्मा आनन्द स्वामी जी जीवन की घटनाओं पर आधारित स्कूल के छात्रों द्वारा एक लघुनाटक भी प्रस्तुत किया गया।

विद्यालय की प्रि. डॉ. अंजना गुप्ता ने कार्यक्रम में उपस्थित हुए समस्त अतिथिजनों को संबोधित करते हुए महात्मा आनंदस्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्हें नमन कर उनकी सादगी, सेवा, समर्पण व त्याग को भावना को दर्शाती हुई एक सुन्दर झलक प्रस्तुत की। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए समस्त अतिथिजनों के प्रति आभार प्रकट किया।

विद्यालय के चेयरमैन डॉ. वी.पी. लखनपाल ने समस्त अतिथिजनों, छात्रों, अभिभावको व शिक्षको को सम्बोधित करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि विद्यार्थियों को दैनिक यज्ञ के आयोजन की शिक्षा दे कर इसमें पारंगत किया जाए। इस तरह हम समाज में संस्कृति का प्रचार व प्रसार कर सकते हैं।

माननीय मुख्य अतिथि श्री ओ.पी. सोनी, शिक्षा मंत्री, पंजाब ने अपने सम्बोधन मे कहा कि वेद हमारा आधार है यज्ञ हमारी तन और मन को शुद्ध करते है। शिक्षाविदों का कर्त्तव्य है कि वह बच्चों को वैदिक संस्कृति से जोड़ें। डी.ए.वी. स्कूल इस दिशा में हमेशा तत्पर रहे है। उन्होंने स्कूल की प्रिं. डॉ. अंजना गुप्ता के प्रयास की भूरि–भूरि प्रशंसा की, उन्होंने डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर को 11,00,000/– रुपये की धन राशि देने की घोषणा की।

कक्षा बारहवीं के 95 प्रतिशत से अधिक अंक लेने वाले और कक्षा ग्याहवीं के विभिनन विषयों के मेधावी छात्रों को पुरस्कार दिए गए। योगा, टेबल टैनिस, स्कैंटिग, बाक्सिंग, तैराकी खेलों के राष्ट्र–स्तरीय विजेताओ को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती निर्मल गुप्ता, आर्य समाज के सदस्य श्री राकेश मेहरा, श्री इन्द्रपाल आर्य, श्री संदीप आहुजा, श्री दीपक महाजन, श्री गौरव तालवाड़, श्री प्रदीप मलिक एवं विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों से प्रि. डॉ. नीरा शर्मा, प्रिं. विपिन जिष्ठु, प्रिं. अजय बेरी, प्रिं. निशी शर्मा, प्रि. सुनीता शर्मा तथा एवं विद्यालय के समस्त शिक्षकगण भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के समापन पर श्री ओमप्रकाश शास्त्री जी ने शान्ति पाठ सम्पन्न करवाया। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में 'अग्निना अग्नि समिध्यते (ऋ.1/12/6) ज्योति से ज्योति दीप्त होती है, दीप से दीप जलाओ एक अन्धकार पराभूत हो जायेगा', यह शिक्षा दी। आइए! हम दीप से दीप जलाते हुए, दीपमाला बन ज्योतित हों और इस समाज को भी ज्योतित करें।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ – सम्पादक

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर में मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन

सोहन लाल डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर में करवा चौथ के अवसर पर मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन गृह विज्ञान क्लब की अध्यक्ष डॉ. पूजा जी की देखरेख में किया गया। जिसमें 35 प्रतिभागिओं ने भाग लिया। डॉ. सुषमा गुप्ता, डॉ. नरेन्द्र कौशिक, डॉ. नीलम लूथरा, तथा डॉ. सतनाम कौर ने प्रतियोगिता में निर्णायकों की भूमिका निभाई।

प्रतियोगिता की संयोजिका डॉ. पूजा ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण तथा महिला छात्राओं का उत्साह बढ़ाने के लिए किए जाते हैं। इस प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं: प्रथम अनिशा, विदिशा, द्वितीय प्रीतिका, आरती, तृतीय गरिमा शर्मा, निधि तथा सांत्वना पुरस्कार तरूणा, ममता और संगीता नैगी।

इस अवसर पर डॉ. निर्मल गोयल, श्री पवन कुमार, श्रीमती नीरूपमा, श्रीमती रश्मि, श्रीमती तृप्ति माथुर, श्रीमती गुरप्रीत कौर तथा सुश्री ममता कार्यक्रम में उपस्थिति दर्ज की व विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 04 नवम्बर 2018 से 10 नवम्बर 2018

समित्पाणि शिष्य के उद्गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः** छन्दः **अनुष्टुप्**।

● **(अग्ने)** हे यज्ञाग्नि! **(एताः)** ये **(ते)** तेरे लिए **(समिधः)** समिधाएँ [हैं], [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [ब्रह्मचारियों] में **(आयुः)** जीवन, [और] **आचार्याय** (आचार्य) के लिए **(अमृतत्वम्)** अमरत्व **(धेहि)** प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक–एक कर अग्नि में आहुति दूँगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य–रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध–अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल–वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु–शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि–समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में स्वामी जी ने बताया कि ब्रह्म की खोज के लिए चार गुण होने चाहिएँ। वे चार गुण हैं आत्मा और अनात्मा का विवेक, लोक और परलोक में कर्म के फल से वैराग्य, षट् सम्पत्ति और मुक्ति की तीव्र इच्छा।

इस आत्मा को जान लेने से मनुष्य प्रत्येक दशा में शान्त रहता है। मनुष्य के अन्दर शान्ति तब आती है, जब उसके अन्दर मानसिक बल हो। जिस संसार के पीछे तुम पागल हुए जाते हो यह किसी के साथ नहीं गया, कभी किसी के साथ जाएगा भी नहीं, यह नष्ट होने वाला है। सदा साथ देने वाला नहीं है, इस पर विश्वास मत करो!

शम का अधिकारी बनने के लिए पहला साधन है, मन को वश में करो। मन को वश में करने का दूसरा साधन मन की वास्तविकता को समझो, वह जड़ है, उसमें कोई शक्ति नहीं। शक्ति तुम्हारे अन्दर है, ऐसा समझोगे तो मन वश में अवश्य हो जाएगा।

'तीसरा साधन है त्याग। ब्रह्म को, ईश्वर को पाना चाहते हो तो उसके गुणों को अपने अन्दर लाने का प्रयत्न करो। उसका सबसे महान् गुण है त्याग, उससे बड़ा त्यागी और कोई नहीं।

अब आगे ...

चौथा साधन है सदा ईश्वर को स्मरण रखना, उसके नाम का जाप करना। ऐसा करने से मन ऊपर उठता है, वश में रहता है। कुछ लोग कहते हैं कि क्या ईश्वर के नाम का जाप, ओ३म् का जाप और गायत्री मन्त्र का जाप हर समय हो सकता है? उठते, बैठते, चलते, फिरते भी हो सकता है? मैं कहता हूँ कि अवश्य हो सकता है। ओ३म् हमारी माँ है। गायत्री हमारी माँ है। संसार के अन्दर अपनी माँ को पुकारते समय क्या हम यह सोचते हैं कि हम किस दशा में हैं? बच्चा किसी भी दशा में हो, कीचड़ में लथपथ हो या नहा–धोकर अच्छे कपड़े पहने हुए, जब भी वह माँ को बुलायेगा और उसकी पुकार माँ के कानों में पहुँचेगी, तो वह पुकार को सुनेगी अवश्य। बच्चा यदि कीचड़ में लथपथ है, धूल से अटा पड़ा है, तो भी वह उसे उठाकर हृदय से लगा लेगी। ईश्वर हमारी माँ है। उठते, बैठते, चलते, फिरते, सोते, जागते किसी भी समय उसे पुकारना और याद करना ठीक है –

तुलसी अपने राम को, हीज भजो या खीज।
भूमि पड़े उपजेंगे ही, उल्टे–सीधे बीज।।

जो लोग हर समय ईश्वर को याद करते हैं, ईश्वर को अपने सामने मानते हैं, उनके मन में और वाणी में एक महान् शक्ति जाग उठती है। तानसेन के गुरु थे स्वामी हरिदास। अकबर ने एक बार उसका गाना सुना। मोहित हो गया। तानसेन से बोला, "तू ऐसा क्यों नहीं गा सकता?" तानसेन ने कहा, "मैं गाता हूँ आपके लिए। वे गाते हैं ईश्वर के लिए। मैं आपके दरबार का गवैया, वे हैं ईश्वर के दरबार के गायक। मुझमें और उनमें वही अन्तर है, जो आपके और ईश्वर के दरबार में है।" और जो कुछ तानसेन ने कहा, वह मिथ्या नहीं। जो लोग ईश्वर का नाम लेते हैं, हर समय उसके गुण गाते हैं, उनके मन की दशा दिन–प्रतिदिन ऊपर–से–ऊपर होती चली जाती है। वे सारे परिवार को एक समझने लग जाते हैं; उस अवस्था पर पहुँचने हैं जहाँ वेद प्रत्येक मानव को पहुँचने का सन्देश देता है। वेद कहता है, "तुममें से कोई छोटा या बड़ा नहीं, ईश्वर ने सबको एक–जैसा बनाया है। मिलकर आगे बढ़ो, सौभाग्य और आनन्द के लिए, सुख और शान्ति के लिए।" वेद के इस सन्देश को समस्त संसार यदि सुन सके, यदि इस पर आचरण कर सके तो फिर किसी साम्यवाद और समाजवाद की आवश्यकता नहीं रहती है। वेद कहता है ईश्वर तुम्हारा पिता है, धरती तुम्हारी माता है, तुम सब भाई–भाई हो। इससे बड़ा साम्यवाद भी कोई हो सकता है? परन्तु यह दशा उत्पन्न होती है उस समय जब मनुष्य हर समय ईश्वर का स्मरण करता है, उसका नाम लेता है, उसके गीत गाता है।

मन के सम्बन्ध में दो बातें और कहनी हैं। एक यह कि मन है क्या? बहुत शोर सुनते हैं इसका। यह कोई राजा या महाराजा नहीं, प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति नहीं, यह तो एक नौकर है, जो भगवान् ने आत्मा को दिया। तुम्हारा मुण्डू है। जड़ है। इसलिए मिला है कि इससे काम लो,

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

दीपमाला की दिव्यता

● भद्रसेन

भारतीय पर्वों में दीपमाला का एक विशेष स्थान है। इस अवसर पर मुख्य रूप से तीन भावनायें हमारे सामने आती हैं। जैसे कि प्रकाश, पवित्रता और (लक्ष्मी) पूजा।

प्रकाश – अमावस्या की काली रात को सर्वत्र दीपादि जगमगाते हैं। अतएव इस पर्व को दीपमाला, दीपावली प्रकाश पर्व, ज्योतिः पर्व के नाम से भी स्मरण करते हैं। प्रकाश में वस्तु स्थिति स्पष्ट दिखाई देती है, कि कोई चीज कैसी है? और तभी हम किसी कार्य को करने में सक्षम होते हैं, अन्यथा नहीं। अन्धकार में वस्तुस्थिति स्पष्ट न होने से केवल कार्य का अभाव ही नहीं होता, अपितु ठोकर, भय, दुविधा की स्थिति भी बन जाती है। कार्य का न होना भी असफलता, असिद्धि का ही रूप या कारण बनता है।

हमारे शरीर में भिन्न–भिन्न कार्यों को करने के लिए अनेक इन्द्रियाँ हैं। उनमें से आँख भी एक है, वह तभी कुछ देखने में समर्थ होती है, जब उसको प्रकाश प्राप्त होता है, क्योंकि भौतिक शास्त्र के अनुसार नेत्र तैजस इन्द्रिय है। अतः नेत्र को प्रकाश की सहायता आवश्यक है। दिन में स्वाभाविक रूप से सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है और रात को ही प्रकाश की व्यवस्था की जाती है। प्रकाशयुक्त होने से ही दिन, आदित्य आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं। (**घुरित्यह्नो नामधेयं घोतते इति सतः** निरुक्त 1, 2, **ते एव घावौ घोतनात्** 2,6 आदित्यः **स्वः पृश्निः इत्यादिशब्द आदित्यः कस्मात् आदीप्तो भासा** – निरुक्त 2, 4 **स्वृतो भासा इत्यादि**)। हमारे शास्त्रों में अनेक तरह के प्रकाशों, ज्योतियों और उनके साधनों का संकेत प्राप्त होता है। (**ज्योतिषा बाधते तमः** यजु. 33, 92। **अवातिर ज्योतिषाग्निः तमांसि** ऋ. 6,9,1। **सूर्यो ज्योतिः** यजु. 3,9। **अग्नि ज्योतिः** यजु 3.9। **त्रीणि ज्योतींषि सचते** – यजु. 32,5। **अग्निना अग्निः समिध्यते** ऋग 1,12, 6 **तथा** निरुक्त 7, 4–6 **में अग्नि, जातवेदाः, वैश्वानर का वर्णन विशेष दृष्टव्य है**)। व्यवहार में लकड़ी, तेल, कोयला, गैस, बिजली आदि के यथाशक्ति किए जाने वाले प्रयोग इसी बात के समर्थक सिद्ध होते हैं। हाँ, प्रकाश के कारण ज्योतिकारकों को भी देव कहा जाता है। (**देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, घोतनाद्वा**–नि. 7, 4। **अग्निर्देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता** – यजु. 14, 20)।

भौतिक शरीरधारियों के लिए प्रकाश अनिवार्य है। अतएव वे दिन और प्रकाश से प्यार करते हैं। यह ठीक है, कि उल्लू रात में भी देख सकता है, अतः उसको निशाचर कहते हैं। वस्तुतः बिल्ली, उल्लू आदि की आँख में ऐसा विशेष भौतिकतत्त्व होता है, जिस से वे देख सकते हैं। मानव समाज के लिए तो प्रकाश अनिवार्य है, तभी तो 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' 'तेजोऽसि तेजो मयि धेहि' की प्रार्थना तथा कृति सदा ही प्रिय रही है।

अन्धकार में दिखाई न देने से जहाँ कार्य करना कठिन हो जाता है, वहाँ ठोकर, भय, दुविधा की सम्भावना बढ़ जाती है। अतः अन्धकार का जहाँ मुख्य अर्थ – अन्धेरा है, वहाँ अन्धेर = अन्याय, शोषण, अत्याचार के अर्थ में भी आता है। तभी तो कहते हैं –क्यों अन्धेर मचा रखा है। यह स्थिति किसी को भी प्रिय नहीं, क्योंकि तब सब कुछ चौपट हो जाता है।

प्रकाश शब्द प्रपूर्वक काशृ दी प्तौ धातु से बनता है, दीप्ति चमक को कहते हैं। प्रकाश से स्थान, स्थिति, वस्तु स्पष्ट, सुनिश्चित, सन्देह रहित रूप में सामने आ जाती है। प्रकाश से व्यवस्था बनती है, जिससे कार्य करना सरल हो जाता है (**कर्मणामहः स्मृतम्**) और तब टिकाव या स्थायित्व रहता है। इसी का दूसरा नाम सत्य भी कहा जा सकता है, क्योंकि उसमें अन्दर–बाहर की भिन्नता, छल का स्थान नहीं है। (**न तत्सत्यं यच्छलेनाम्युपेतम्** महा. उद्योग 35, 49। विदुरनीति 3, 58। **वचन विघातोऽर्थ, विकल्पोप पत्त्या छलम्। अहः कस्मात्, उपाहरन्ति–अस्मिन् कर्माणि** निरुक्त 2,6) अर्थात् प्रकाश से जो जैसा है, वह उसी रूप में सामने आ जाता है। जैसे कि खाने से पेट भरता है, शरीर पुष्ट होता है, जीवन चलता है। यह बात स्पष्ट, सुनिश्चित, दुविधा से दूर और सत्य है। निरुक्तकार ने अग्नि, सूर्य आदि देवों का आकार मानवों जैसा शरीरधारी है या नहीं? इस पर चर्चा करते हुए दो टूक निर्णय दिया है, कि अपितु **यद् दृश्यतेऽपुरुषविधं तत्** 7, 2 अर्थात् जैसा रूप हमें उनका स्पष्ट दिखाई देता है, वैसा ही मानना चाहिए। इस सारे का भाव यह है कि 'कंगन को आरसी क्या' अर्थात् स्पष्ट, सुनिश्चित को बिना झिझक के स्वीकार करना चाहिए।

वस्तुतः विज्ञान का भी यही तात्पर्य है कि प्रकाश की तरह जो स्पष्ट, सुनिश्चित है, उसको वैसा ही स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि कार्य–करण के सम्बन्ध से जब किसी घटना, बात का परीक्षण किया जाता है तो उससे जो अनुभव, परिणाम सामने आता है, उसको स्वीकार करना ही वैज्ञानिक भावना है। जैसे कि कृषि की प्रक्रिया में परीक्षणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कैसी भूमि में कब, कैसे, किस बीज को बोने और संभालने से कौन–सी फसल कैसी होती है। इसलिए ही वेद ने हर समझदार को सुपरीक्षित, सुनिश्चित, स्पष्ट समझ को अपनाने का सन्देश दिया है। (**सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय** – ऋग 7,104, 12)

इससे यह सिद्ध हुआ कि भोजन की तरह जो प्रदेश, नदी, पर्वत, पदार्थ आदि भूगोल के तत्त्व जिस रूप में आज हमारे सामने स्पष्ट हैं, उनको उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए। जैसे कि गंगा कहाँ से निकलती है, कहाँ–कहाँ बहती है और उसका जल जैसा है, यह सब कुछ सर्वथा स्पष्ट है। इसको वैसा न मानकर कल्पना की उड़ान में उड़ना कबूतर की तरह आँख मूँदने वाली ही बात हो जाती है। हाँ, कल्पना, अलंकार आदि का स्थान काव्य में होता है, न कि भूगोल में। अतः व्यवहार में जो बात, कार्य जैसा है, जिस तरह से सिद्ध होता है, उसको उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए। जैसे कि हम नदी को पार करना चाहते हैं, तो उसको तैरकर या नौका से या पुल से ही पार किया जा सकता है। यह बात प्रकाशवत सर्वथा स्पष्ट, सुनिश्चित है। पुनरपि यह समझना कि अमुक ने नाम विशेष के आधार पर पार किया था, तो यह बात केवल अपने मन की मान्यता मात्र ही है, न कि व्यावहारिक।

इसी तरह यह एक सच्चाई है कि 'पुरुषार्थ ही इस दुनिया में, सब कामना पूरी करता है', अर्थात् जिस कार्य की सिद्धि का जो ढंग है, उससे ही वह पूर्ण होता है। जैसे कि हम अपने कारोबार, रसोई आदि में देखते और अनुभव करते हैं कि प्रत्येक कार्य की सफलता उसकी अपनी विधि से ही होती है, (**मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति भास**–दूतघटोत्कच – 1, 18) **न कि मनमर्जी से** (**यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।** गीता 16,23) पुनरपि न कि मनमर्जी से। (**यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।** गीता 16, 23) पुनरपि किसी विशेष नाम या तन्त्र–जन्त्र = यन्त्र–मन्त्र से या विशेष तरह के पूजा–पाठ–जप–स्मरण से किसी भौतिक कार्य की सफलता समझना एक तरह से विज्ञान और सच्चाई से दूर भागने वाली बात ही है।

दीपावली की दूसरी भावना है – पवित्रता। अतएव इस पर्व पर कई दिन पहले से ही सफाई, सफेदी का कार्य प्रारम्भ हो जाता है, क्योंकि वर्षा के कारण प्रयोग की वस्तुओं में सीलन गन्दगी आदि आ जाती है। इसीलिए इन दिनों स्वच्छता–अभियान चलता है। जिसमें वस्तु के अनुरूप स्वच्छता का ढंग अपनाया जाता है। यथा वस्त्रों के भेद से कुछ को साबुन से, कुछ को पाउडर से और कुछ को विशेष वस्तु के साथ जल को गर्म करके स्वच्छ करने का प्रयास किया जाता है। इसी तरह मिट्टी, ईंट, सीमेण्ट, संगमरमर, चिप्स आदि वाला जैसा भी जो भवन होता है, उसमें तदनुरूप लिपाई–पुलाई, सफेदी, रंगरोगन आदि किए जाते हैं। व्यवहार की वस्तुओं की विविधता की दृष्टि से ही मनुस्मृति के पाँचवें अध्याय में उनकी सफाई के भिन्न–भिन्न उपायों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। (**जैसे कि – अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।** विघातपोभ्या – 5, 109)

भारतीय धर्म, साहित्य, संस्कृति में संस्कार, स्नान, शुद्धि, शौच, तप योग, यज्ञादि शब्दों की बहुत चर्चा मिलती है। जिनका मुख्य भाव निखार से है और अधिकतम का महत्त्व निखार के साधन रूप में ही है। वस्तुतः भजन, पूजन, यजन का विधान भी हृदय शुद्धि आदि की दृष्टि से ही है, तभी तो वेद का विधान है, कि '**शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः** ऋ. 10,18,2 आज भी हम अपने कारोबार को प्रारम्भ करने से पूर्व किसी न किसी रूप में सफाई और धूप, अगरबत्ती आदि का प्रयोग करते हैं। वेदादि शास्त्रों में अनेकधा जहाँ पवित्र शब्द आया है, (**पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते। अतप्त तनूर्न तदामो अश्नुते** – ऋ. 8,83,1) वहाँ पवित्र बनाने वाली वस्तुओं की विस्तार से चर्चा भी मिलती है। (**पावका नः सरस्वती ऋ. 5,3,10, = न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विघते** गीता 4, 38, **स्तुता मया वेद वरदा माता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम्** अथर्व 19, 71, 1)

दीपमाला की तीसरी भावना पूजा की है। प्रत्येक भारतीय पर्व पर कुछ न कुछ पूजन अवश्य होता है। दीपावली पर विशेष रूप से कुछ लक्ष्मी का पूजन करते हैं। लक्ष्मी विषयक जो स्रोत हैं और तत्सम्बद्ध मान्यता के अध्ययन, भजन से यह स्पष्ट होता है कि लक्ष्मी–सफाई, प्रकाश से जुड़ी हुई है।

182 शालीमार नगर, होशियारपुर
मो. 9464064398

दीवाली रंग लायेगी

हृदय की दूरियों को ये मिटा करके ही जायेगी।
दीवाली रंग लायेगी दीवाली रंग लायेगी।।

उदय हो ज्ञान का सूरज उजाला जग में फैलेगा।
अविद्या नाश तब होगा अंधेरी दूर जायेगी।।

जो जलते हैं परस्पर देख सुख सम्मृद्धि को हरदम।
ये उनके मन में अविरल प्यार की गंगा बहायेगी।।

न होगा कोई भी लम्पट लुटेरा चोर कर्मचारी।
जगत् गुरु देश भारत को ये फिर से चम–चमायेगी।।

वैभव सम्पदाओं के ये बादल खूब ही बरसेंगे।
सभी निश्चित होवेंगे खुशी घर–घर में आवेगी।।

अटल विश्वास जागेगा प्रभु से है "वन्दना" मेरी।
किम् कर्त्तव्य विमूढ़ों को ये कुछ करके दिखायेगी।।

वन्दना शास्त्री बी.एड.
आर्य कन्या हाई स्कूल हाँसी, हिसार
मो. 9466850651

श्रद्धा कामायनी

● शिवनारायण उपाध्याय

श्रद्धा कामायनी का ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 151 श्रद्धा सूक्त पर कार्य है। इस सूक्त में केवल 5 ऋचाएँ है जिनमें श्रद्धा की महत्ता को प्रदर्शित किया गया है। वास्तव में श्रद्धा के अभाव में निष्ठा नहीं बनती है। निष्ठा न बनने की किसी भी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना असंभव है और ज्ञान के बिना मुक्ति और सुख भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अब हम उनकी ऋचाओं पर विचार करते हैं।

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धाम् भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।।

ऋ.10.151.1.

पदार्थः– (**श्रद्धया**) श्रत् नाम सत्य है और उसके धारण करने की क्रिया को श्रद्धा कहते हैं। (**अग्निः**) यज्ञ आदि में अग्नि (**समिध्यते**) प्रज्वलित किया जाता है। (**श्रद्धया**) श्रद्धा के साथ ही (**हविः**) यज्ञ में हवि (**हूयते**) छोड़ी जाती है। (**श्रद्धाम्**) श्रद्धा के द्वारा ही (**भगस्य**) ऐश्वर्य के (**वचसा**) वाणी से (**वेदयामसि**) प्रकट किया जाता है।

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियंश्रद्धे दिदासतः।
प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं म उदितं कृधि।।

ऋ.10.151.2.

पदार्थः– (**श्रद्धे**) हे श्रद्धा। (**ददतः**) दाता को (**प्रियम्**) प्रिय फल मिले। (**श्रद्धे**) हे श्रद्धा (दिदासतः) देने की इच्छा करने वाले को (**प्रियम्**) अच्छा फल मिले। (**भोजेषु**) भोगर्थियों का (**प्रियम्**) प्रिय होवे। (**यज्वसु**) यज्ञ करने वाले का प्रिय होवे (**इदम्**) इस (**मे**) मेरी (**उदितम्**) उक्ति को (**प्रियम्**) प्रिय (**कृधि**) कर।

यथादेवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चीक्रे।
एवं भोजेषु यज्वत्वमाकमुदितं कृधि।।

ऋ.1.151.3.

पदार्थः– (**यथा**) जिस तरह (**देवाः**) विद्वान् लोग• (**उग्रेषु**) उग्र (**असुरेषु**) बलवान् पुरुषों पर (**श्रद्धाम्**) श्रद्धा, विश्वास (**चक्रिरे**) करते हैं (**एवम्**) उसी तरह (**भोजेषु**) भोगार्थी (**यज्वसु**) यज्ञ कत्ताओं में (**अस्माकम्**) हमारे (**उदितम्**) उक्त को विश्वसनीय और प्रिय (**कृधि**) कर।

भावार्थः– हे श्रद्धे। जैसे विद्वान् लोग उग्र बलवान पुरुषों पर विश्वास करते हैं वैसी ही भोगार्थी यज्ञ कत्ताओं में हमारे, वचन को विश्वसनीय और प्रिय बना देते हैं।

श्रदा देवा यजमान वायुगोपा उपासते।
श्रद्धा हृदय्य9या कूत्या विन्दते वसु।।

ऋ.10.151.4.

पदार्थः– (**देवाः**) विद्वान् लोग (**वायुगोपाः**) वायु के समान बलवान् पुरुषों से रक्षित (**यजमानाः**) यजमान (**श्रद्धाम्**) श्रद्धा की (**उपासते**) उपासना करते हैं तथा सभी लोग (**हृदयता**) हृदय में होने वाले (**आकूत्या**) संकल्प एवं भाव से (**श्रद्धाम्**) श्रद्धा का सेवन करते हैं। श्रद्धावान् मनुष्य (**श्रद्धया**) श्रद्धा से (**वसु**) धन को (**विन्दते**) प्राप्त करता है।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि।
श्रद्धां सूर्यस्त निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धा पयेह नः।।

ऋ. 10.151.5.

पदार्थः– (**श्रद्धाम्**) श्रद्धा का हम (**प्रातः**) प्रात काल में (**हवामहे**) आह्वान करते हैं। (**मध्यन्दिनम्**) दोपहर में (**परि**) सब ओर से (**हवामहे**) हम आह्वान करते हैं, (**सूर्यम्**) सूर्य के (**निम्रुचि**) अस्त होने के समय में भी हम श्रद्धा का आह्वान करते हैं। (**श्रद्धे**) हे श्रद्धा। (**न**) हमें (**इह**) इस लोक में (**श्रद्धामय**) श्रद्धा युक्त कर। इतिशम्।

73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)

☞ पृष्ठ 02 का शेष

भगवान शंकर और ...

इसलिए नहीं कि इसके हाथों में अपनी नकेल दे दो। जब सृष्टि नहीं थी और प्रकृति रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण से रहित, परमाणुओं का विशाल सागर बनके सोई पड़ी थी, तब ईश्वर की प्रेरणा–शाक्ति ने इसको कहा, ''जाग!'' जागी वह । इससे महातत्त्व उत्पन्न हुआ, उससे समष्टि बुद्धि उत्पन्न हुईं, मन और बुद्धि और चित्त उत्पन्न हुए। तब तन्मात्राएँ उत्पन्न हुई। ये सब–के–सब तो प्रकृति के परिवर्तित रूप हैं। प्रकृति है जड़। इसलिए ये सब–के–सब भी जड़ हैं। मन भी जड़ है। इस जड़ वस्तु के पीछे भागते फिरें, इसके संकेतों पर नाचते रहें, तो क्यों? हम तो जड़ नहीं। इसे हमारी इच्छा के अनुकूल चलना चाहिए, हमें इच्छा के अनुसार नहीं।

दूसरी बात यह है कि मन बनता कैसे है? आकाश या पाताल से नहीं आता। जो अन्न हम खाते हैं उससे मन बनता है। जो कुछ भी हम खाते हैं, शरीर के अन्दर जाकर उसके तीन भाग हो जाते हैं। सबसे ठोस भाग मल बनकर निकल जाता है। उसके सूक्ष्म भाग से शरीर की शक्ति बनती है। सबसे सूक्ष्म भाग मन बन जाता है। इसलिए कहते हैं कि जैसा अन्न खाओगे वैसा मन बनेगा। जो व्यक्ति गन्दा–खोटा अन्न खाता है, तो उसका मन कभी अच्छा होगा नहीं। अन्न को जिस भावना से कमाया हो, बनाया हो और तैयार किया हो, सबका प्रभाव मन पर पड़ता है। बूढ़े भीष्म पितामह जब तीरों की शैया पर लेटे थे और धर्म–ज्ञान की बड़ी–बड़ी बातें कर रहे थे, तब द्रौपदी ने उससे कहा, ''पितामह! इस समय तो आप बहुत बड़ी–बड़ी बातें कर रहे हैं, बहुत अच्छी बातें हैं ये ज्ञान की। परन्तु जब दुर्योधन और दुःशासन ने भरे सभाभवन में मेरा अपमान किया, उस समय आपका यह धर्म और ज्ञान कहाँ था?'' भीष्म पितामह दुःख के साथ बोले, ''तू ठीक कहती है बेटी! उस समय मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। दुर्योधन का पापभरा अन्न मैं खा रहा था। उसने मेरे मन को मलिन कर दिया। अर्जुन के तीरों से रक्त निकला, कई सप्ताह से निकल रहा है, तो उस अन्न का प्रभाव समाप्त हो गया।''

एक साधु रहता था किसी जंगल में। कितने ही लोग उसके दर्शन को जाते। जो भी जाता, उसे शान्ति मिलती। एक दिन उस देश के राजा भी गये। देखा, साधु एक वृक्ष के नीचे बैठे हैं। सर्दी और वर्षा से बचने का कोई प्रबन्ध नहीं है। राजा ने कहा, ''महात्मन्, यहाँ बहुत कष्ट होता होगा। आप मेरे साथ चलिये, महल में रहिये।'' साधु पहले तो माना नहीं, राजा ने बहुत आग्रह किया तो बोले, ''अच्छा चलो।'' महल में आये। एक सुन्दर कमरे में ठहरे। हर समय नौकर उपस्थित रहने लगे। अच्छा भोजन मिलने लगा। तीन मास व्यतीत हो गये। राजा उसकी पूजा करते, रानी उसमें श्रद्धा रखती। एक दिन रानी नहाने के लिए स्नानागार में गई। नहाकर उठी तो वह हीरों का हार पहनना भूल गई जो उसने उतारकर स्नानागार में रख दिया था। हार वहीं पड़ा रहा। रानी के पश्चात् साधु स्नानागार में गया, हार को देखा, उठाकर अपनी कौपीन में छुपा लिया। स्नानागार से निकले, महल से बाहर चले गये। कुछ देर बाद रानी को हार का ध्यान आया; दासी से बोली, ''स्नानागार में छोड़ आई हूँ, उसे ले आओ।'' परन्तु वहाँ तो हार नहीं था। खोज होने लगी। पूछा गया, गुसलखाने में रानी के पश्चात् कौन गया था? पता लगा कि महात्मा गये थे। महात्मा की खोज होने लगी। महात्मा मिले नहीं। राजा को ज्ञात हुआ तो उसने सिपाहियों को आज्ञा दी, ''उस साधु के पीछे जाओ। उसे पकड़कर ले आओ।''

इधर वे महात्मा शहर से बाहर निकले। जंगल में चले गये। दिन–भर चलते रहे। पाँव थक गये। भूख भी सताने लगी तो जंगल का एक फल तोड़कर खा गये। फल था एक ओषधि, उससे दस्त लग गये। इतने दस्त आये कि महात्मा निर्बल हो गये। तभी उन्हें हार का ध्यान आया। उसे देखते ही बोले, "मैं इसे क्या उठा लाया? मैंने चोरी क्या की?" उसी समय वापस चल पड़े। आधी रात के समय राजा के महल में पहुँचे। आवाज़ दी। राजा जागे। महात्मा ने उनके पास जाकर कहा, "राजन्! आपका यह हार है, ले लो। मैं यहाँ से उठाकर ले गया था। मुझसे अपराध हुआ है, मैं क्षमा माँगने आया हूँ।" राजा ने आश्चर्य से कहा, "वापस ही लाना था तो तुम इसे क्यों ले गये थे?" साधु ने कहा, "राजन्! क्रोध न करना, तीन मास तक मैं तुम्हारा अन्न खाता रहा, उससे मेरा मन पापी हो गया। जंगल में जाकर दस्त आये, शरीर शुद्ध हो गया। तेरे अन्न का प्रभाव समाप्त हो गया। मैंने वास्तविकता को जाना और वापस आया गया।"

यह है अन्न का प्रभाव! इसलिए यूनान के फ़िलॉसफ़र पैथागोरस ने कहा था, "तुम मुझे बताओ कौन आदि क्या खाता है, मैं तुम्हें बताऊँगा कि वह क्या सोचता है।"

[तभी पूज्य स्वामी जी ने अपनी घड़ी को देखा; बोले–]

हम मन की बात चिल्लाते रहे, यहाँ पूरा घण्टा चला गया। अच्छा, बाकी फिर।

ओ३म् शम्!

क्रमशः

महर्षि दयानन्द सरस्वती का सत्योपदेश

● भावेश मेरजा

(बाबू श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय संगृहीत एवं पण्डित श्री घासीराम जी रचित 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित' ग्रन्थ से संकलित उपदेश)

1. भारत में यज्ञ की प्रथा उठ जाने के पश्चात् मूर्तिपूजा चल पड़ी और लोगों का इस प्रकार विश्वास हो गया कि अग्नि, वायु आदि का एक–एक अधिष्ठात्री देवता है, परन्तु यह कपोल–कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।
2. मैक्समूलर को ईसाई मत का बहुत पक्षपात है। यदि उसने वेदों का ऐसा अनर्थ किया है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं (क्योंकि उसका हार्दिक अभिप्राय यह है कि भारतवासी वेदों के ऐसे अर्थों को देख कर भ्रम में पड़ जाएँ और वेदों को छोड़ कर बाइबिल को ग्रहण कर लें। अतः उसका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।
3. यदि ब्राह्मण वेदों को कण्ठस्थ करके सुरक्षित न रखते तो वेद कहाँ रहते?
4. हम किसी को शिष्य नहीं बनाते हैं और जो हमारे सिद्धान्तों को मानता है वही हमारा सेवक व शिष्य है और जो लोग हमारे कार्य में सहायक होते हैं वही हमारे भाई हैं।
5. हमारे पास मन्त्र देने की कोई फुँकनी नहीं है जिससे हम किसी के कान में मन्त्र फूँके और मन्त्र तो सारे वेद में हैं ही, हम क्या मन्त्र देंगे?
6. (स्त्रियों को उपदेश) पति–सेवा करना ही तुम्हारा धर्म है और अपने पतियों से ही उपदेश लेना तुम्हारा कर्त्तव्य है। मन्दिरों आदि स्थानों में आना–जाना और साधु–संन्यासियों के दर्शनों के लिए इधर–उधर घूमना, स्त्री–जाति के लिए अत्यन्त अनुचित है। स्त्री–जाति का मुख्य धर्म पति–सेवा और उत्तम रीति से सन्तति व । पालन ही है।
7. उपासना काल में उपासक ईश्वर के सत्संग में मग्न होते हैं। ऐसे समय में कोई कितना ही बड़ा मनुष्य आए उपासकों को खड़ा न होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं है। ऐसा करने से (उपासना के समय खड़ा होने से) उपासना धर्म का निरादर होता है।
8. हम केवल यह चाहते हैं कि लोग वेदों की आज्ञाओं का पालन करें और केवल निराकार, अद्वितीय परमेश्वर की पूजा और उपासना करें, शुभ गुणों को ग्रहण और अवगुणों को त्याग दें।
9. अपनी भलाई का काम तो गधे और अन्य पशु–पक्षी भी करते हैं। मनुष्यता तो इसी में है कि वह दूसरों का उपकार करे।
10. जीव अपने ही किए हुए कर्मों का फल भोग सकता है। इसलिए पुत्र–पौत्रादि का किया हुआ श्राद्ध–तर्पणादि परलोकगत जीव के लिए वृथा है।
11. धर्मपूर्वक उपायों से अपनी उन्नति अर्थात् सुख की वृद्धि करना 'स्वार्थ' कहलाता है, परन्तु इस समय को लोग येनकेन प्रकारेण धर्माधर्म व विवेक रहित उपायों से अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं और परहानि व परदुःख का कुछ भी विचार नहीं करते, इस प्रकार स्वार्थान्ध हैं। परार्थ वा परोपकार वह है जिसके आचरण से मनुष्यों के दुःख की निवृत्ति हो।
12. न्यायप्रियता, स्वार्थ–त्याग, पराये हित में योग देना आदि उत्तम गुण सत्पुरुषों की कसौटी है। ऐसे पुरुष अपने उत्तम गुण और स्वभाव से पहचाने जाते हैं। वे योगाभ्यास, परोपकार, उदारता, न्याय–कर्तृत्व, ईश्वर–भक्ति और दयालुता आदि गुणों से युक्त होते हैं।
13. इतिहास में महाभारत और वाल्मीकिय रामायण, मनुस्मृति तथा सूत्र ग्रन्थों को देखिए, वेदों का भाष्य देखिए। फिर आपको प्रकट हो जाएगा कि मूर्तिपूजा निरी गप्प है।
14. क्रियात्मक जीवन ही जीवन है। वेद–विहित शुभ कर्मों का करना ही निवृत्ति–मार्ग है। वही मनुष्य जीवित कहलाने का अधिकारी है जो अपने जीवन को लोकहित के कार्यों में लगाता है।
15. सांख्यकर्त्ता (महर्षि कपिल) अनीश्वरवादी नहीं हैं। लोग ऋषिकृत टीकाओं को छोड़कर और भ्रष्ट लोगों की टीकाओं को पढ़कर ऐसा कहने लगे हैं। भागुरि ऋषि की टीका को पढ़ो, तुम्हारा सन्देह दूर हो जाएगा। 'ईश्वराऽसिद्धेः' सूत्र पूर्वपक्ष का है। आगे उसका उत्तर दिया गया है। यदि सांख्यकर्त्ता नास्तिक होता तो वह पुनर्जन्म, वेद, परलोक और आत्मा को क्यों मानता?
16. कोई दर्शन दूसरे दर्शन का विरोधी नहीं है। छः कारणों से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है – न्याय दर्शन परमाणुओं का, मीमांसा दर्शन कर्म का, सांख्य दर्शन तत्त्वों के मेल का, योग दर्शन ज्ञान–विचार का, वैशेषिक दर्शन काल का और वेदान्त दर्शन परमात्मा का वर्णन करता है।
17. यदि एक मनुष्य केवल चने चबाकर रहे और ब्रह्मचर्य का पालन करे तो वह मांसाहारियों से कहीं अधिक बलिष्ठ हो सकता है।
18. यतियों के लिए संग्रह करने का निषेध है, परोपकार में व्यय करने के लिए धन लेना पाप नहीं है।
19. राजाओं (शासकों) के लिए ब्रह्मचर्य का पालन नितान्त आवश्यक है। राजाओं को चाहिए कि कानून बनाकर लोगों को ब्रह्मचर्य पालन पर बाध्य करें और बालविवाह को रोकें। मनुष्यों को सदाचारी और वैदिक धर्मानुयायी होना चाहिए।
20. भारत में आजकल जहाँ–तहाँ ब्राह्मण–श्रेणी ही पाचक का कार्य करती दिखाई दे रही है। प्राचीन भारत में ऐसा नहीं था। ब्राह्मण का कार्य रसोई बनाना नहीं है। यदि ऐसा होता तो अज्ञात वास के समय विराट नगर में भीमसेन प्रधान सूपकार कैसे बन सकते थे?
21. यह बात नहीं थी कि पहले समय में वर्ण जन्मगत न हो। जन्मगत तो था, परन्तु निम्नस्थ जाति गुण–कर्म से उच्चतर और उच्चतर कर्मदोष से निम्नतर हो जाती थी।
22. वेद स्वतः प्रमाण हैं। जैसे सूर्य का अस्तित्व सिद्ध करने के लिए उसे दीपक से दिखाने की आवश्यकता नहीं होती, ऐसे ही वेद को प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।
23. विवाह में इतना धन व्यय करना अनुचित है। अकर्मण्य, भोजन लोलुप ब्राह्मणों को खिलाने से कुछ इष्ट नहीं होता। पुलिसवालों को खिलाने से फल होता है। वे रात्रि में आपके घरों की रक्षा करते हैं।
24. ऋषि–प्रणाली का अनुसरण करो, मुझे गुरु मानने से तुम्हारा क्या प्रयोजन है ?
25. पञ्चवटी में श्रीरामचन्द्र वनवास के समय आकर रहे थे तो इससे उसे तीर्थ मानने का क्या कारण है ?
26. मैंने वेदों के एक–एक मन्त्र पर पूर्ण विचार किया है। उनमें कोई भी युक्ति विरुद्ध बात नहीं है।
27. बिना आकार के प्रतिबिम्ब नहीं उतर सकता और जब परमेश्वर का आकार नहीं तो उसकी मूर्ति झूठी। यदि किसी का फोटो – ठीक–ठीक प्रतिकृति उतारकर स्मरण करने और देखने के लिए सामने रखी जाए तो ठीक है, परन्तु ब्रह्म की मूर्ति और अनुकृति उतारकर और नकल करना कुछ–का–कुछ कर देना है और सर्वथा मिथ्या और अवैध है।
28. जैसे माता–पिता अपने पुत्र को सिखाते हैं कि माता–पिता और गुरु की सेवा करो, उनका कहा मानो, ऐसे ही भगवान् ने स्तुति सिखाने के लिए वेद में अपनी स्तुति लिखी है।
29. भगवान् का मुख तो नहीं है। उसने अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा – चार ऋषियों के हृदय में वेद का प्रकाश किया, परन्तु वेद उन ऋषियों के बनाए हुए नहीं हैं। वे भगवान् के बनाए और कहे हुए हैं। वे चारों ऋषि कुछ न पढ़े थे और न कुछ जानते थे। भगवान् ने उनके द्वारा वेद कहे हैं। जैसे कोई मनुष्य पित्त व सन्निपात में विवश होकर बोलने लगते हैं, वैसे ही भगवान् ने उन चारों के घट में और वाणी में वेदों का प्रकाश किया और उन्होंने इसके बल से विवश होकर कहा। अतः स्पष्ट है कि वेद भगवान् ने ही कहे हैं।
30. जीव अपनी जाति = प्रकृति वा स्वरूप में एक हैं और संख्या में अनेक हैं। जैसे एक मनुष्य–जाति है और दूसरी पशु–जाति है, इत्यादि। जैसे जल में जो रंग मिला दोगे जल वैसा ही हो जाएगा, वैसे ही जिस देह में यह जीव जाएगा वैसा ही उसका रंग–रूप और छोटा–बड़ा देह होगा, परन्तु जीव सबका एक–सा है, जैसा चींटी का वैसा ही हाथी का।

8–17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात–392015, मो. 9879528247

दयानन्द–दर्शन एवं वाङ्मय के मर्मज्ञ

स्मृतिशेष डॉ. भवानीलाल भारतीय

● डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार

कुछ वर्ष पूर्व के वे दिन आज भी स्मृति–पटल पर अंकित हैं, जब डॉ. भवानीलाल भारतीय सपत्नीक हरिद्वार आए थे और प्रिय शिष्य डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री के निवास पर ठहरे थे। उस समय उनका अत्यधिक निकट सान्निध्य प्राप्त हुआ था। इस दौरान आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में उनके तीन–चार व्याख्यान करवाये गये और उनकी अनवरत हिन्दी सेवा के लिए 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर उन्हें सम्मानित भी किया गया। उनके इस प्रवास–काल में हम लोग भ्रमण के लिए पतंजलि योगपीठ भी गये तथा वे हमारी कुटिया में भी पधारे। यह थी उनकी अन्तिम हरिद्वार यात्रा और हम सबसे सदा स्मरणीय साक्षात्कार।

डॉ. भारतीय इससे पूर्व भी प्रायः गुरुकुल विश्वविद्यालय के आमंत्रण पर आते रहते थे और जब भी आते तभी अन्य लोगों के अतिरिक्त आचार्य डॉ. रामनाथ जी वेदालंकार से उनके निवास पर जाकर अवश्य मिलते थे। इस विद्वत्–मिलन में चर्चा का विषय होता–''महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज और वैदिक वाङ्मय के विभिन्न पक्ष''।

कालान्तर में डॉ. भारतीय से अनेक बार दूरभाष पर विभिन्न विषयों पर चर्चा होती रही। उन्होंने समय–समय पर मेरी शंकाओं का भी समाधान किया। कुछ लोगों का मत है कि आर्यसमाज के मंच से गीता पर प्रवचन नहीं होने चाहिये। वे अपने विरोध का कारण यह बतलाते हैं कि महर्षि दयानन्द गीता–पठन के पक्ष में नहीं थे। मेरी सम्मति इसके विपरीत थी। मैंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डॉ. भारतीय आदि से इस विषय में उनकी सम्मति जानना चाही। सभी का उत्तर मेरे पक्ष में ही था। डॉ. भारतीय ने सप्रमाण यह बताया कि महर्षि दयानन्द ने कतिपय प्रक्षेपों को छोड़कर शेष गीता के पठन–पाठन पर कोई आपत्ति नहीं है। इस संदर्भ में उन्होंने स्वलिखित एक पुस्तक 'मैंने ऋषि दयानन्द को देखा' में प्रकाशित एक लेख को देखने को कहा और उसकी फोटोस्टेट प्रति भी भेजी। साथ ही उन्होंने गीता पर स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा लिखित पुस्तक भी देखने का परामर्श दिया। जब कभी मैंने अपने सम्पादन काल में उनसे **'स्वस्ति पन्थाः'** के लिए लेख भेजने का अनुरोध किया, उसे भी उन्होंने पूरा किया। अब भी इस पत्रिका में उनके लेख छपते रहते हैं। पिता जी की स्मृति में प्रकाशित 'श्रुति मंथन' के लिए उनके दो लेख प्राप्त हुए और जब प्रकाशित ग्रन्थ उनको प्राप्त हुआ तो उसे देखकर उन्होंने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

12 सितम्बर 2018 की रात्रि में मेरे पुत्र स्वस्ति अग्रवाल ने बताया कि फेसबुक में प्रसारित समाचार के अनुसार डॉ. भारतीय अब हमारे बीच नहीं रहे–90 वर्ष की आयु में उसी दिन प्रातःकाल की बेला में उनका शरीरान्त हो गया। पीछे रह गईं उनकी स्मृतियाँ एवं उनका बहुआयामी कृतित्व।

डॉ. भारतीय का जन्म 1 मई 1928 ईस्वी (आषाढ़ कृष्ण 3, संवत् 1985 विक्रमी) को परबतसर (नागौर जिला) राजस्थान में श्री फकीरचन्द जी के यहाँ हुआ था। आपकी प्राथमिक व मिडिल स्तर तक की प्रारम्भिक शिक्षा परबतसर तथा समीपवर्ती संगममेर के नगर मकराना में हुई थी। हाईस्कूल से बी. ए. तक शिक्षा जोधपुर में प्राप्त की। तदन्तर शिक्षक रहते हुए हिन्दी (1953) और संस्कृत (1961) में एम. ए. किया। तत्पश्चात् सन् 1968 में **''आर्यसमाज का संस्कृत भाषा और साहित्य को योगदान''** विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय से पी–एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

'माथुर' से 'भारतीय' कैसे

डॉ. भवानीलाल जी एक बार डीडवाना (राजस्थान) अपनी ननिहाल गये। वहाँ उनकी भेंट गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्नातक प्रो. ओमप्रकाश वेदालंकार से हुई। एक दिन बातचीत के दौरान प्रो. वेदालंकार ने जिज्ञासावश आपसे पूछा कि आपका 'माथुर' में 'भारतीय' बनने का क्या रहस्य है? भारतीय जी ने मुस्कुराते हुए जो उत्तर दिया, वह उन्हीं के शब्दों में– ''वेदालंकार जी!... आज से अनेक वर्ष पूर्व जब मैं ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सम्पर्क में आया तो मुझे ऋषि का 'कर्मणा जाति' का सिद्धान्त बड़ा उपयोगी, सार्थक और आवश्यक जान पड़ा। उससे पूर्व मैं अपने नाम के साथ 'माथुर' शब्द लगाया करता था। तब मुझे यह भारस्वरूप प्रतीत होने लगा। मुझे ऐसा लगने लगा कि सर्वप्रथम मुझे 'माथुर' (जन्मना जातिसूचक शब्द) को अपने से विलगाना पड़ेगा तभी मैं ऋषि दयानन्द का अनुयायी अपने को मान सकूँगा। फिर विचार आया कि इस शब्द को मैं हटा दूँ, किन्तु यह लोक प्रभाव किसी न किसी रूप से उसे जोड़ता ही रहेगा। अतः इस बुराई के स्थान पर कोई अच्छाई स्वीकारनी चाहिए। क्या नाम रखा जाए इस पर विचार करते–करते मुझे लगा कि 'भारतीय' नाम ठीक रहेगा।... बस तब से 'माथुर' 'भारतीय' हो गया और आज तक यही हूँ।''

आर्यसमाज की विचारधारा का प्रभाव

भारतीय जी जब पाँचवीं कक्षा में पढ़ते थे तो इतिहास की एक पाठ्यपुस्तक में 'सरल ऐतिहासिक कहानियाँ' (पं. गोकुलप्रसाद पाठक) में कबीर, राजा राममोहन राय, दयानन्द और ईसाई धर्म सुधारक मार्टिन लूथर जैसे धर्म–सुधारकों के जीवन–चरित्र पढ़े और धार्मिक–सुधार की महत्ता से परिचित हुए। महर्षि दयानन्द की विचारधारा ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया और उसी दिन से आप दयानन्द के अनुयायी बन गये। कालान्तर में जोधपुर आने पर आर्यसमाज सरदारपुरा के वार्षिकोत्सव पर पंडित प्रकाशचन्द्र कविरत्न, पं सुरेन्द्र शर्मा आदि के भजन तथा पं. कालीचरण शर्मा, आचार्य विश्वश्रवा सदृश विद्वानों के तर्कपूर्ण व्याख्यान सुनने के बाद आप आर्यसमाज की विचारधारा में पूर्ण रूप से सराबोर हो गये। प्रारम्भ में आप आर्य कुमार सभा जोधपुर के सदस्य बने और 18 वर्ष की आयु हो जाने पर आर्यसमाज गुलाब सागर जोधपुर के सभासद बन गये। आप सन् 1954 तक इसी समाज में पुस्तकालयाध्यक्ष एवं मंत्री पद पर कार्य करते रहे। सन् 1956–57 में नागौर जिले के छोटी खाटू ग्राम में हिन्दी के वरिष्ठ प्राध्यापक नियुक्त होकर गये, जहाँ मात्र एक सत्र में ही प्रसुप्त आर्यसमाज को जीवित, जागृत किया। सन् 1962 से 1969 तक आपने पाली आर्यसमाज की गतिविधियों का संचालन किया, उसके पश्चात् आप अजमेर आ गये। यहाँ आप वर्षों तक नगर आर्य समाज के प्रधान रहे। सन् 1970 में आप परोपकारिणी सभा, अजमेर से जुड़ गये और उसके संयुक्त मंत्री चुने गये। परोपकारिणी सभा के कार्यकाल में आपने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का सम्पादन, मुद्रण, प्रकाशन आदि का पूर्ण तत्परता से संचालन किया, साथ ही सभा के मुख पत्र 'परोपकारी' के भी सम्पादन का दायित्व वर्षों तक संभालते रहे।

पंजाब विश्वविद्यालय की वैदिक शोध–पीठ में

सन् 1976 में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में आर्यजगत् के वरिष्ठ विद्वानों–डॉ. रामप्रकाश, स्वामी डॉ. सत्यप्रकाश आदि तथा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर.सी. पॉल के सद्प्रयास से महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ की स्थापना हुई। इसके प्रथम प्रोफेसर तथा अध्यक्ष के रूप में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी स्नातक एवं वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार की नियुक्ति हुई और वे 1980 तक इस पद पर कार्यरत रहे। उसके बाद दिसम्बर 1980 से द्वितीय प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में डॉ. भारतीय की नियुक्ति की गई। वे प्रथम चरण में 2 मई 1988 तक इस पीठ में कार्य करते रहे और उसके बाद भी विश्वविद्यालय के अधिकारियों के आग्रह पर सन् 1991 तक कार्य किया।

यद्यपि आर्यसमाज से सम्बद्ध विषयों पर आपकी लेखनी अनवरत रूप से चलती रही, परन्तु उनके अध्ययन एवं लेखन का प्रधान विषय महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा आर्यसमाज का इतिहास–विशेष रूप से उसकी साहित्यिक गतिविधियों का मूल्यांकन था। उनका दयानन्द के जीवन का अध्ययन इतना सूक्ष्म, विस्तृत तथा बहुआयामी था कि उनके जीवन की प्रत्येक घटना, तिथि, उनके सम्पर्क में आये लोग, प्रसंग तथा उनके साथ जुड़ी एक–एक घटना उन्हें हस्तामलकवत् ज्ञात थी एवं उनके एतद्विषयक अध्ययन और ज्ञान को देखते हुए उन्हें दयानन्द और आर्यसमाज का जीता–जागता विश्वकोश कहना किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होगी। शोध–पीठ में आकर भी आपने स्वयं तथा अपने से सम्बद्ध शोध–छात्रों के माध्यम से एतद्सम्बन्धी अन्वेषण किया–करवाया और उसे लेखबद्ध करना ही अपना प्रमुख लक्ष्य रखा।

सारस्वत–साधना

आपने सृजन का यह सब कार्य 'दूसरों' पर निर्भर रहकर नहीं, वरन् अपने निजी पुस्तकालय में संगृहीत साहित्य के आधार पर ही किया। आपके पुस्तकालय में दयानन्द विषयक जितने ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उतने शायद ही किसी अन्य पुस्तकालय में हों। डॉ. भारतीय इस विषय में कहते थे– ''यह तो संभव है कि कई पुस्तकें अन्यत्र हैं, उन्हें मैं भी प्राप्त नहीं कर सका, किंतु मेरे पास इस विषय की जितनी पुस्तकें हैं, वे आपको अन्यत्र एक स्थान पर नहीं मिलेंगी। दयानन्द के प्रत्येक ग्रन्थ के भिन्न–भिन्न भाषाओं में हुए अनुवाद, विभिन्न प्रकाशकों

द्वारा प्रकाशित उनके संस्करण, उन पर लिखी गई टीका, टिप्पणी, व्याख्या, भाष्य आदि के ग्रन्थ, उनके खण्डन–मण्डन में लिखे गये ग्रन्थ आदि प्रभूत मात्रा में है। इसी प्रकार दयानन्द की भिन्न–भिन्न भाषाओं में लिखित जीवनियाँ शताधिक हैं।'' इतना ही नहीं, दयानन्द विषयक जो भी नवीन सामग्री, संदर्भ या प्रसंग किसी भी पत्र–पत्रिका या ग्रन्थ में उन्हें मिला, उन्होंने उसकी कटिंग, फोटोस्टेट प्रति अथवा उसे मूल रूप में प्राप्त करके अपने पुस्तकालय में सुरक्षित रखा। ऐसा समृद्ध है उनका निजी पुस्तकालय, जो उनके हम लोगों से बहुत दूर जाने के बाद भी उनके स्मृति–पुञ्ज को संजोये यहीं रह गया, सुधीजनों के उपयोग के लिए। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम उनका कितना सार्थक उपयोग करते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन के प्रति रुचि जागृत होने पर डॉ. भारतीय ने अपने गहन अध्ययन के बाद सन् 1956 के आस–पास यह निश्चय किया कि वे कालान्तर में आर्यसमाज की विचारधारा से भिन्न विचारों के कुछ विद्वानों/आचार्यों के साथ महर्षि दयानन्द की तुलना करके ग्रन्थों का प्रणयन करेंगे। उनकी इस संकल्पना की ही परिणति है : **दयानन्द और राजा राममोहन राय** (सन् 1957 में प्रकाशित) तथा **स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द** (इसका द्वितीय संस्करण सन् 1973 में प्रकाशित। ये दोनों ही कृतियाँ पर्याप्त चर्चित एवं लोकप्रिय हुईं।

ऋषि दयानन्द के जीवन, सिद्धान्त, मान्यताओं तथा अर्यासमाज के इतिहास और साहित्यपरक अन्वेषणों में एक नया अध्याय स्थापित कर चुके डॉ. भारतीय ने सम्बन्धित समग्र संकलित ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर **'नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'** शीर्षक से एक बृहत्काय ग्रन्थ की रचना की, जिसके **प्रथम संस्करण में 27 अध्याय और 660 पृष्ठ थे। इसका लेखन–कार्य पंजाब विश्वविद्यालय की शोध–पीठ के कार्यकाल** में आरम्भ किया गया था। यह संस्कारण महर्षि दयानन्द के निर्वाण के शताब्दी वर्ष (1983) में परोपकारिणी सभा अजमेर से प्रकाशित हुआ था। इस कृति में घटनाओं के सन्निवेश में आपकी दृष्टि पूर्णतया तथ्यपरक रही है। यही कारण है कि आपने इसमें इतिहास सम्मत एवं प्रमाण–पुष्ट घटनाओं को ही सम्मिलित किया है। वस्तुतः अब तक लिखे गये जीवन–चरित्रों में इस ग्रन्थ का अपना अप्रतिम स्थान है।

प्रथम संस्करण के प्रकाशन के बाद डॉ. भारतीय ने अनुभव किया कि इसमें ऋषि–जीवन के बहुत से प्रसंग अनछुए रह गये हैं तथा कुछ विवादास्पद प्रसंगों पर अनुसंधानात्मक विश्लेषण के आधार पर समाधान अपेक्षित रह गये हैं। यह विचार आते ही उन्होंने इस पर गहन शोध एवं अध्ययन करते हुए नए संस्करण की तैयारी शुरू कर दी। अंततः इस ग्रन्थ का द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण दो भागों में वर्ष 2009 में श्री घूड़मल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास हिण्डौन सिटी से प्रकाशित हुआ था। इसमें लगभग 1000 पृष्ठ हैं। डॉ. भारतीय के शब्दों में, ''यह ग्रन्थ उनकी सारस्वत–साधना का सुमेरु है।''

इससे पूर्व आपने श्री प्रभाकर देव आर्य, श्री घूड़मल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी के आग्रह पर सन् 2006 में **'ऋषि दयानन्दः सिद्धान्त और जीवन–दर्शन'** शीर्षक विशद विवेचनापूर्ण ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में उनके क्रान्तिदर्शी विचारों और युगपरिवर्तनकारी कार्यों का ऐतिहासिक संदर्भ में किया गया विवेचन प्रस्तुत है।

ऋषि–जीवन–चरित्र पर आपका एक पूरक ग्रन्थ **'महर्षि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी'** है जिसमें लेखक ने स्वामी जी के सम्पर्क में आये और उनसे किसी न किसी रूप में जुड़े पचास ख्यातनामा व्यक्तियों के जीवन–वृत्त पर प्रकाश डाला है। इस संकलन में महर्षि के प्रति अनुराग रखने वाले, उनके सांस्कृतिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन का अनुमोदन करने वाले और उनकी अगाध विद्या एवं उदात्त गुणों से लाभ प्राप्त करने वाले महानुभावों का तो समावेश था ही, साथ ही महर्षि के विचारों से भिन्न आस्था एवं मान्यता रखने उन सज्जनों का भी जीवन–परिचय इसमें दिया गया है जो उनके भक्त, प्रशंसक व सत्संगी की श्रेणी में आते थे। इस कृति से डॉ. भारतीय के वैदुष्य एवं गंभीर चिन्तन का परिचय मिलता है।

आपका एक महत्त्वपूर्ण कार्य डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार के प्रधान सम्पादकत्व में सात खण्डों में प्रकाशित **''आर्यसमाज का इतिहास''** के लेखन में सहयोग है। अन्य खण्डों के लेखन में यथावश्यक सहयोग देने के साथ–साथ इसका पाँचवाँ खण्ड आपकी सूक्ष्मेक्षिका, सारगर्भित विश्लेषण पद्धति, प्रतिभा एवं अध्यवसाय का ही परिणाम है जिसमें आर्यसमाज की विचारधारा से अनुप्राणित लेखकों द्वारा प्रणीत धार्मिक एवं लौकिक साहित्य का विशद सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली से 11 खण्डों में प्रकाशित **'श्रद्धानन्द ग्रन्थावली'** आपके तथा श्री राजेन्द्र जिज्ञासु के अथक परिश्रम की ही परिणति है, जिसमें आपने स्वामी जी की अंग्रेजी रचनाओं के अनुवाद के साथ–साथ सभी खण्डों के लिए सामग्री संकलन एवं सम्पादन में अभूतपूर्व योगदान देकर श्रेष्ठतम कीर्तिमान स्थापित किया है। ग्रन्थमाला के 11वें खण्ड में स्वामी जी की मौलिक और शोधपूर्ण जीवनी के प्रस्तुतीकरण में आपकी साहित्यिक शैली, सुष्ठु शब्द–चयन एवं प्रांजल वाक्य–रचना देखते ही बन पड़ती है।

पुराणों में चित्रित श्री कृष्ण–चरित्र के प्रत्येक प्रसंग की महाभारत के आलोक में तथ्यात्मक आलोचना करते हुए रचित 'श्री कृष्ण चरित' डॉ. भारतीय की एक मानक कृति है। इसका प्रथम संस्करण मार्च 1958 में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित हुआ था। यह ग्रन्थ पाठकों में इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि संशोधन/परिवर्धन के साथ इसका द्वितीय संस्करण अगस्त 1981 में गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ने प्रकाशित किया। आप द्वारा प्रणीत **'दयानन्द साहित्य सर्वस्व'** सन् 1984 में प्रकाशित हुआ, जिसमें दयानन्द कृत ग्रन्थों और उनके बारे में लिखित समस्त ग्रन्थों की सूची दी गयी थी।

यही नहीं, आपने आर्यजगत् के कतिपय मूर्धन्य विद्वानों के जीवन पर भी अपनी कलम चलाई है। इनमें प्रमुख हैं : भारत की स्वतंत्रता हेतु क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रवर्तक एवं महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य **'श्यामजी कृष्ण वर्मा'**, स्वामी दयानन्द के अनुयायियों में अग्रगण्य **'स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती'**, ख्याति प्राप्त शास्त्रार्थ महारथी **'पं. गणपति शर्मा'**, राजस्थान में धार्मिक जागरण के सूत्रधार एवं महर्षि से साक्षात्कार करने वाले **'योगीराज महात्मा कालूराम'**, राजस्थान में राजनीतिक गतिविधियों को आरम्भ करने में अग्रगण्य देशभक्त **'श्री चाँदकरण शारदा'**। इसी के साथ आपने आर्यजगत् के कतिपय वेदसेवक विद्वानों एवं शास्त्रार्थ महारथियों के व्यक्तित्व के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भी दो अलग–अलग कृतियों का प्रणयन किया है। इतना ही नहीं **'महर्षि श्रद्धांजलि अंक'**, **'महर्षि दयानन्द प्रशस्ति'**, **'रुद्रदत्त शर्मा ग्रन्थावलीः भाग–1'**, **'दयानन्द दिग्विजयार्क'**, **'कर्णवास में महर्षि दयानन्द के ऐतिहासिक संस्मरण'**, **'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह'**, **'काशी शास्त्रार्थः शताब्दी संस्करण'** आदि आपके द्वारा सम्पादित कुछ अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं, जिनसे आपकी अद्भुत संपादन–प्रतिभा का दिग्दर्शन होता है।

एक बात और डॉ. भारतीय के शब्दों में, ''आर्यसमाज के कई बुजुर्ग श्रेणी के लोग इस ग्रन्थ (नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती) में अपनाई गई वैज्ञानिक और तुलनात्मक लेखन–शैली को समझ नहीं पाये और जब उन्होंने इसकी निरर्थक आलोचना की तो मैं उत्तर में एक वाक्य कहकर ही मौन हो गया कि प्रत्येक ग्रन्थ को पढ़ने और समझने की पात्रता भी हर एक में नहीं होती।'' वस्तुतः यह उनकी सदाशयता एवं शालीनता थी। कोई आश्चर्य नहीं, यदि इस तरह की टिप्पणी उनके न रहने पर भी की जाती रहे। ऐसा मैं किसी पूर्वाग्रह के कारण नहीं कह रहा, वस्तुतः आर्यसमाज में कुछ 'सुधीजनों' में दोषान्वेषण की यह प्रवृत्ति घर करती जा रही है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है।

लेखन के अतिरिक्त मौखिक प्रचार भी भारतीय जी की विचाराभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम रहा। वे जहाँ–जहाँ भी प्रचारार्थ जाते थे, वे महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रामाणिक तथ्यपरक दस्तावेजों को ही अपने व्याख्यानों का विषय बनाते थे। कहीं–कहीं तो वे स्वमी दयानन्द के जीवन एवं विचारों पर कई–कई दिन की कथाएँ भी प्रस्तुत करते थे, जिन्हें सुनकर श्रोता मन्त्रमुग्ध एवं भावविभोर हो जाया करते थे।

अंत में एक बात और, सामान्यतया लोगों की यह धारणा होना स्वाभाविक ही है कि इतनी पुस्तकों के लेखक को रायल्टी में इतनी धनराशि प्राप्त हुई होगी कि वह एक अच्छा खासा धनपति होगा, पर वस्तुस्थिति इस सोच से पूरी तरह भिन्न है। डॉ. भारतीय के ही शब्दों में, ''...मैंने संसार में भौतिक दृष्टि से कुछ भी उपार्जित नहीं किया। हाईस्कूल के एक सहायक अध्यापक के रूप में 68 रुपये मासिक वेतन पर 1949 में मेरी नियुक्ति हुई और मैं शिक्षा के इसी क्षेत्र में बढ़ता–बढ़ता देश के एक विख्यात विश्वविद्यालय में दयानन्द के नाम पर संचालित वैदिक शोध पीठ का अध्यक्ष और आचार्य नियुक्त हुआ, यह मेरे लिए कोई न्यून उपलब्धि नहीं रही।...जब मैं आर्यसमाज के छोटे–बड़े पत्रों में अपने मे अपने लेख प्रायः ही प्रकाशनार्थ भेजा करता था तो कई वर्ष हुए आर्यसमाज के एक सुप्रतिष्ठित तथा विश्वविद्यालय में स्थापित विद्वान् ने मुझे उलाहना–सा देते हुए कहा कि मैं क्यों अपनी शक्ति को इन छोटे–छोटे पत्रों को लेख भेज कर व्यय करता हूँ। मैंने अत्यन्त विनम्रता से निवेदन किया कि राजस्थान सरकार की कृपा से मुझे दाल–रोटी खाने जितना तो उपलब्ध हो ही जाता है। उसके उपरान्त मैं जो कुछ लिखता–पढ़ता हूँ वह अपनी मातृ–संस्था आर्यसमाज के यश और गौरव को बढ़ाने के लिए ही करता हूँ।... यही मेरा व्यसन है, यह मेरा नशा है। इन पत्रों में मैं स्वान्तः सुखाय ही लिखता हूँ।'' यह था डॉ. भारतीय का महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रति दीवानापन, जिसे उन्होंने 'कर्म' रूप में परिणत किया, 'अर्थ' और 'यश' की कामना से नहीं; वरन् मात्र **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** की भावना से तथा दयानन्द और आर्यसमाज के मिशन को जन–जन तक पहुँचाने के संकल्प को मूर्तरूप देने की दृष्टि से। ऐस महान् तत्त्वदर्शी मनीषी, विचारक एवं आर्यसिद्धान्तों के विलक्षण प्रचारक डॉ. भारतीय की स्मृति में शत्–शत् नमन।

217, आर्य वानप्रस्थ आश्रम,
ज्वालापुर–249407 (हरिद्वार)

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का बलिदान

● डॉ. अशोक आर्य

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने समय के एक विलक्षण समाज सुधारक थे। संसार के महापुरुषों के जीवनों का अवलोकन करने से पता चलता है कि वह सब सामयिक परिस्थितियों से प्रभावित थे तथा इनके कारण उन्होंने समझौते किये किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती एक ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने कभी अपने मन्तव्यों और सिद्धान्तों के लिए कोई भी परिस्थिति आने पर भी समझौता नहीं किया। उन्होंने कभी ऐसे समझौते की गुंजाइश ही नहीं छोड़ी।

इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने अपने विचारों और धर्म को सदा अलग ही रहने दिया, इनका मिश्रण नहीं होने दिया। इसके साथ ही अन्य गुरुओं की भाँति गुरु, पैगम्बर या पीर बनने का यत्न भी नहीं किया। जिन मान्यताओं को ब्रह्मा से जैमिनी प्रयन्त माना गया, उन मान्यताओं को ही आपने भी अपनाया। इस त्याग भावना ने ही उन्हें महर्षित्व प्रदान किया।

स्वामी जी ने कभी अपने को उच्च दिखाने का प्रयास नहीं किया किन्तु स्वलिखित जीवन के माध्यम से अपना जो अल्प सा परिचय दिया। अपने इस आत्मा परिचय में बताया कि **"मेरा जन्म मच्छकांटा नदी के किनारे मोरवी राज्य के एक कस्बे में औदिच्य ब्राह्मण कुल में संवत 1881 में हुआ था। मेरे पिता की पुष्कल भूमिहारी थी। उनको मोरवी राज्य से अधिकार मिले थे। वे अच्छे सताधारी थे और प्रबन्ध स्थिर रखने के लिए कुछ सैनिक भी रखते थे।** पण्डित लेखराम जी ने भी काठियावाड के मोरवी को ही ऋषि का जन्म स्थान माना है तो देवेन्द्र मुख्योपाध्याय जी ने मोरवी के टंकारा गाँव को स्वामी जी का जन्म स्थान माना है। पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक जी ने **"ऋषि दयानन्द के पिता का नाम कर्सन जी ही लिखा है और जन्म स्थान भी टंकारा का जीवापुर मुहल्ला वर्णित किया है।"**

ऐसे बालक का नाम मूल शंकर रखा गया और मूल जी के नाम से बुलाया जाने लगा। उन्हें समय आने पर देवनागरी शब्दों का ज्ञान कराना आरम्भ किया गया। आठवें वर्ष यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तथा शिवभक्त बनाकर चौदह वर्ष की आयु में शिव पूजन व जगराता के लिए शिव रात्रि के व्रत के लिए माता के विरोध की चिन्ता किये बिना ले जाया गया। रात्रि के दूसरे पहर तक जब पिता सहित सब भक्त सो गये तो कुछ चूहे वहाँ उछल कूद करने लगे व प्रसाद गन्दा करने लगे तो मूल जी को अनुभव हुआ कि चूहे वहाँ उछल–कूद करने लगे व प्रसाद गन्दा करने लगे तो मूल जी का अनुभव हुआ कि चूहे से अपनी रक्षा न कर पाने वाला यह शिव भगवान नहीं हो सकता और वह उठकर घर चले गये तथा भोजन खाकर व्रत त्याग दिया।

अभी बालक अन्धविश्वास से दूर हो सच्चे शिव की खोज में जुटा ही था कि उसकी छोटी बहिन की मृत्यु हो गई। इस बात से उन्हें बहुत दुःख हुआ। इससे मन वैराग्य की ओर बढ़ गया, इस मध्य ही उनके प्रिय चाचा की मृत्यु हो गयी। अठारह वर्षीय मूल जी मृत्यु से छुटकारे का मार्ग ढूँढने लगे किन्तु उन्हें कोई मार्ग न मिला। माता पिता ने बालक की अवस्था देखकर उसके विवाह का निर्णय किया। किन्तु विवाह होता इससे पूर्व ही आप घर त्याग कर चल दिये, पकड़े भी गये किन्तु फिर ऐसा भागे कि हाथ न आये। वह साधु लोगों के द्वारा लुटते रहे, उनका नाम शुद्ध चैतन्य रख दिया किन्तु संन्यास देने को कोई आगे न आया। अन्त में स्वामी पूर्णानन्द जी ने उनका परीक्षण करने के पश्चात् एक दक्षिणी ब्राह्मण से संन्यास दीक्षा दिलवा कर दयानन्द नाम दिया। अब स्वामी जी गुरु विरजानन्द के दर्शनार्थ चल पड़े और 1916 सम्वत् में मथुरा पहुँचे। यहाँ रहते हुए स्वामी जी ने व्याकरण तथा आर्ष ग्रन्थों को पढ़ा। इस समय तक स्वामी जी की आयु 35 वर्ष हो गई थी।

दण्डी गुरु की कुटिया छोड़ते समय गुरु दक्षिणा का समय आया। स्वामी जी ने लौंग प्रस्तुत किए तो गुरु जी ने कहा कि **"इस परम पुनीत जगतगुरु भारत की ओर दृष्टि उठाओ! जो समस्त संसार का गुरु था। आज वह विद्या विहीन होकर ईश्वरीय ज्ञान वेद के नाम तक को भी भूल चुका है ... अतः वेद के सूर्य का प्रकाश करके मनुष्य मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करो। मिथ्या विश्वासों को दूर करो।"**

गुरु से आशीर्वाद लेकर वैशाख सम्वत् 1920 तदनुसार अप्रैल 1863 को मथुरा से चलकर आगरा में सेठ गुल्लामल जी के बाग में ठहरे। आपके प्रभाव से यहाँ कुछ लोगों ने मूर्तिपूजा को त्याग दिया। यहाँ से आप ने देश भ्रमण करते हुए देश की अवस्था का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया तथा वेद की खोज में 1865 ईस्वी में धौलपुर फिर वहाँ से माघ वदी 12 सं 1921 में ग्वालियर गये जहाँ राजा के सन्देश वाहक को बताया कि भागवत महात्म्य का फल कष्ट क्लेष के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। 12 मार्च 1867 में हरिद्वार के भीम गोडा में पाखण्ड खण्डिनी पताका लहरा कर यहाँ से अनेक व्याख्यान दिये व शास्त्रार्थ किए। इस मध्य स्वामी जी जहाँ भी गये, वहाँ उनके व्याख्यान होते रहे। अनेक स्थानों पर स्वामी जी को मारने का प्रयास किया गया किन्तु सफलता नहीं मिली। इस प्रकार देश की अवस्था का अवलोकन कर स्वामी जी कार्य क्षेत्र में उतरे।

सर्वत्र स्वामी जी अन्ध विश्वासों, रूढ़ियों, कुरीतियों के विरोध में व्याख्यान देते। जिससे उनके भक्तों के साथ ही साथ विरोधियों की संख्या भी बढ़ती गई। अनेक बार बम्बई गए किन्तु तीसरी बार जाने पर लोगों ने सत्संग संस्था स्थापित करने की इच्छा प्रकट की। लोगों की इच्छानुसार सत्संग सभा की स्थापना की गई और इसका नाम आर्य समाज रखा गया। इसकी स्थापना सन् 1875 ईस्वी में नए सम्वत् के दिन बम्बई के काकड़वाड़ी नामक स्थान पर की गई। आरम्भ में इस सभा के पच्चीस सदस्य बनाये गये। इससे पूर्व सत्यार्थ प्रकाश भी प्रकाशनार्थ दिया जा चुका था।

स्वामी जी के मुख्य कार्य :

स्वामी जी ने देशाटन कर जिन रूढ़ियों, कुरीतियों तथा अन्ध विश्वासों की खोज की थी, जो सामाजिक, धार्मिक व राष्ट्रीय कमियाँ स्वामी जी को दिखाई दीं, स्वामी जी ने उन्हें दूर करने का ज़ोरदार अभियान चलाया तथा यह आर्य समाज भी इस अभियान का मुख्य अंग बन गया। इस प्रकार समाज के सुधार, जाति के कल्याण व देश के उत्थान के लिए स्वामी जी ने अनेक कार्य किए।

वेद की ओर लौटो :

स्वामी जी ने कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह ज्ञान परम पिता ने सृष्टि के आरम्भ में मानव मात्र के कल्याण हेतु दिया है। इस समय तक लोगों को वेद से दूर करने के लिए अनेक अनर्गल ग्रन्थ बन चुके थे। स्वामी जी ने इन मिथक ग्रन्थों का विरोध करते हुए वेद का सत्य ज्ञान सब के सामने रखा और कहा कि यह ज्ञान ही कल्याण का साधन है, सुख देने वाला है। इस पर ही चलो इस ओर ही लौटो।

नारी की दशा :

स्वामी जी ने देखा कि नारी की दशा इस समय अबला सी बन चुकी है। इस कारण नारी का कहीं सम्मान नहीं है। स्वामी जी ने नारी की दशा सुधारने का निर्णय लिया तथा कहा कि नारी अर्थात् माता निर्माण करने का कार्य करती है। इसलिए इसका सुशिक्षित होना आवश्यक है। नारी की शिक्षा के जो दरवाज़े वर्षों से बन्द हो चुके थे स्वामी जी ने इन कपाटों को नारियों के लिए खोलते हुए कन्या विद्यालय आरंभ किये। लोगों ने जो इस कार्य के लिए स्वामी जी का विरोध किया, स्वामी जी ने उस सब की चिन्ता नहीं की। इसका ही परिणाम है कि आज नारियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों पर आ गयी हैं।

इस समय नारी के तीन घातक शत्रु थे बाल विवाह, बहु विवाह और सती प्रथा। इसके साथ ही साथ पर्दा प्रथा ने भी नारी को पाँव की जूती बना रखा था। बाल विवाह के कारण छोटी आयु में ही विधवा हो जाती थी। सती प्रथा के अन्तर्गत उसे पति की मृत्यु होने पर पति के ही साथ जलना होता था। स्वामी जी ने इन सब बुराईयों के विरोध में आवाज़ उठाई तथा नारी की रक्षा के लिए इन कुरीतियों को दूर करने के लिए भीषण शंखनाद किया। उनका ही प्रयास रंग लाया और आज नारी इन कुरीतियों से बच गई है। आज नारी परिवार की अधिष्ठात्री बन गई है तथा देश के सब कार्यालय नारी व्यवसाय के लिए खुल गये हैं।

दलितोद्धार:

इस समय दलितों की अवस्था भी नारी की ही भाँति अधोगति को जा चुकी थी। इस जाति से सम्बन्धित लोगों को साधारण से नागरिक अधिकार भी न थे। यह लोग सार्वजनिक कुएँ से पानी तक न ले सकते थे। समाज व्यवस्था के लिए जिन लोगों को सेवा का कार्य सौंपा गया था, आज उन लोगों से बुरा व्यवहार होता स्वामी जी न देख सके। स्वामी जी ने कहा कि ऋषियों ने कर्म के आधार पर जाति व्यवस्था बनायी थी। इस व्यवस्था में जन्म कोई आधार नहीं है। इसलिए भी इन्हें भी उठने का, उन्नति करने का अन्यों के ही समान अधिकार है। यदि यह लोग उच्च शिक्षा पा लेते हैं तो उस योग्यता के कारण वह भी वैसी ही योग्यता वालों के समान कार्य प्राप्त करने के अधिकारी हैं। इस प्रकार स्वामी जी ने छुआछूत के विरोध में आवाज़ उठाई। इसका ही परिणाम है कि आर्य समाज में उन दलितों को भी पुरोहित बना दिया, जिन्होंने ऐसी शिक्षा प्राप्त की। आज दलितों को समान अधिकार मिल गये हैं।

भाषा का प्रश्न:

स्वामी जी का मानना है कि हमारी संस्कृति का मूल वेद तथा इसके सहायक व व्याख्या ग्रन्थ उपनिषद् तथा वेद व्याख्या ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थ व दर्शन ग्रन्थ आदि सब कुछ संस्कृत में होने के कारण हमें अपने मूल से जुड़े रहने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है।

हिन्दी हमारी जनभाषा है। देश के प्रत्येक छोर में हिन्दी समझी जाती है। इस कारण हिन्दी में देश को एक सूत्र में बाँधने की शक्ति है, इसलिए देश का सब काम तथा व्यवहार हिन्दी में करना ही उपयुक्त है। यह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। इसलिए स्वामी जी ने अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करने का आह्वान किया। स्वामी जी ने आर्य समाज का सब कार्य हिन्दी में ही करने का आदेश भी दिया। स्वामी जी ने तो हिन्दी के प्रयोग के लिए यहाँ तक कहा कि जिसे मेरा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना है, वह हिन्दी पढ़े।

गाय रक्षा का प्रश्न:

आर्य लोग अपनी आर्थिक सम्पन्नता का आधार गाय को मानते है तथा उस व्यक्ति को धनवान माना गया जिसके पास गाय की संख्या अधिक होती थी। गाय कृषि का भी आधार है, गाय के दूध, घी, मूत्र तथा गोबर यहाँ तक कि इसके दहीं, छाछ आदि भी अनेक रोगों का निदान का कारण होते हैं। फिर गाय हमारी सेवा ऐसे करती है जैसे एक माँ करती है। एक गाय अपने जीवन में हज़ारों लोगों की रक्षा करती है। इसलिए गाय की रक्षा के लिए जोर से नाद गुंजाया। इसकी रक्षा के लिए लाखों लोगों से हस्ताक्षर भी लिए।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

वर्णाश्रम की संक्षिप्त व्याख्या

● खुशहाल चन्द्र आर्य

वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन के चार स्तम्भ कहलाते हैं, जिनका सही रूप में प्रयोग किया जाए तो समाज, राष्ट्र व व्यक्ति विशेष की प्रगति व उत्थान होना निश्चित है। किसी समाज व राष्ट्र को सुचारु रूप से चलाने के लिए निम्न आधार हैं (1) वर्णाश्रम (2) पँच महायज्ञ (3) सोलह संस्कार (4) अष्टांगा योग। यदि कोई व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व पूरा विश्व इन चार कार्यो को सुव्यवस्थित ढंग से अपने जीवन में अपना ले तो उसकी उन्नति व समृद्धि होना आवश्यक है। यदि कोई मनुष्य अपने जीवन में अपने वर्ण तथा अपने आश्रम का कर्त्तव्य, भाव व निष्ठा से पालन करे, साथ ही पंच महायज्ञों व सोलह संस्कारों का विधिवत् प्रयोग करे तथा अष्टांग योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा करते हुए समाधि अवस्था में ईश्वर के परम् आनन्द की अनुभूति करेगा और मृत्यु के बाद ईश्वर के सान्निध्य में रहकर मोक्ष के परम् आनन्द में विचरण करेगा जो जीव का मनुष्य योनि में आकर मोक्ष पाने का परम कर्त्तव्य है! इसीलिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है जो जीव की अन्तिम योनि है। जिस राष्ट्र के निवासी इन चारों स्तम्भों को अपने जीवन में लागू कर ले तो वह राष्ट्र शीघ्र ही उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करते हुए 'विश्व गुरु' के ऊँचे स्थान को सुशोभित कर सकेगा।

इस लेख में हम केवल वर्णाश्रम का ही संक्षिप्त व्याख्या करेंगे जो इसी भाँति है :–

वर्णाश्रम :– वर्णाश्रम में दो शब्दों का समावेश है। पहला है वर्ण, दूसरा है आश्रम। वर्ण समाज व राष्ट्र से सम्बन्ध रखता है और आश्रम, व्यक्ति के जीवन से। वर्ण का अर्थ होता है किसी वस्तु या किसी व्यवस्था का वर्ण करना यानी उसको ग्रहण करके अपने समाज व राष्ट्र को सुचारु से चलाना। ईश्वर ने भी यजुर्वेद में वर्ण व्यवस्था का एक मन्त्र द्वारा संकेत किया है जिसके अनुसार ही हमारे ऋषि–मुनियों ने समाज में वर्ण व्यवस्था की स्थापना की है। मन्त्र इसी भाँति है–

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहु राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रोऽजायत।। यजु. 32/11

इस मन्त्र में वर्ण चार बताए गये हैं जिससे समाज व राष्ट्र सुचारु रूप से चल सके। वे हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन चारों वर्णों के अलग–अलग कर्त्तव्य व कर्म हैं। ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है वेदों व ऋषि–मुनियों के लिखे ग्रन्थों को स्वयं पढ़े तथा दूसरे वर्णों को पढ़ावे जिससे समाज से अज्ञान दूर हो सके। इस मन्त्र में ब्राह्मण की, मुख से उपमा की गई है। समाज का वीर, साहसी बलवान वर्ग को क्षत्रिय वर्ण बताया गया है। इसकी उपमा हाथों से की गई है। इसका कर्त्तव्य है समाज से अन्याय को दूर करना। तीसरा वर्ण है वैश्य जिसका काम है व्यापार करना, खेती करना व पशु पालन करना। इन कामों से वह समाज से अभाव दूर करता है। चौथा वर्ण है शुद्र जो व्यक्ति पढ़ाने से भी नहीं पढ़े, ऊपर के तीनों काम न कर सके, उसका कर्त्तव्य है ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना जिससे तीनों वर्ण अपना–अपना कर्त्तव्य भली–भाँति कर सकें। यह वर्ण व्यवस्था आश्रम में ऋषि–मुनियों ने मनुष्य की योग्यता के अनुसार कर्म के आधार पर बनाई थी। इनमें कोई छोटा–बड़ा नहीं थे। सब एक समान थे। चारों वर्णों को धार्मिक व सामाजिक सुविधाएँ एक समान मिलती थी। प्राचीन काल में प्रत्येक बच्चे को गुरुकुल में पढ़ने के लिए जाना पड़ता था। विद्यार्थी की गुरुकुलीय विद्या समाप्त होने के बाद जब बच्चा अपने माँ–बाप के साथ घर जाने को तैयार होता था तब गुरुकुल का आचार्य जिसने बच्चे को कई वर्षों तक पढ़ाया था, वह उसकी योग्यता और व्यवहार को अच्छी प्रकार जान लिया करता था। वह उस बच्चे का वर्ण निर्धारित करता था। बच्चा अपने माँ–बाप व परिवार के साथ रहते हुए ही अपने वर्ण का पालन करता था और इस प्रकार समाज व राष्ट्र की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहती थी। महाभारत तक यही वर्ण व्यवस्था कर्म के अनुसार चलती रही। महाभारत के महायुद्ध में अधिकतर विद्वान, पुरोहित, आचार्य, योद्धा के समाप्त होने से, कम पढ़े–लिखे, अविद्वान् स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथों में समाज की पूरी बाग डोर आ गई। इन्होंने समाज में हमेशा के लिए अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए वर्ण को जाति बतलाकर कर्म व योग्यता से नहीं जन्म से जाति मानना आरम्भ कर दिया तभी से हिन्दू जाति का पतन आरम्भ हो गया। इसीलिए आज हिन्दू जाति की यह दुर्दशा हो गई और होती जा रही है। अतःवर्ण व्यवस्था सुधरने से ही हिन्दू जाति की प्रगति होगी।

आश्रम व्यस्था :– आश्रम व्यवस्था, यह मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन को सुदृढ़ व सुखमय बनाने वाली है। इस व्यवस्था के अनुसार मनुष्य की आयु एक सौ वर्ष निर्धारित की गई है और उसको चार भागों में बाँटा गया है। पहला ब्रह्मचारिय आश्रम। यह जन्म से लेकर पच्चीस वर्ष तक होता है। इसमें जब बच्चा पाँच या आठ साल का होता है तो गुरुकुल जाकर पच्चीस वर्ष की आयु तक ब्रह्मचारी रहते हुए विद्या अध्ययन करता है। इसमें ब्रह्मचारी वेदों के साथ–साथ ऋषि–मुनि कृत सब ग्रन्थों को पढ़कर अपनी बुद्धि को, और ब्रह्मचर्य का पालन करके अपने शरीर को सुदृढ़ व बलवान बनाता है। इसके बाद पच्चीस वर्ष से पच्चास वर्ष की आयु तक गृहस्थ आश्रम, अपने परिवार के पालन का आश्रम होता है। इसमें वह अपने परिवार का पालन करते हुए विद्वानों व अतिथियों को अपने घर बुला कर समाज व राष्ट्र की सेवा करता है। यह आश्रम सब से ज्येष्ठ व श्रेष्ठ कहलाता है इसी कारण बाकी तीनों आश्रम इसी के ऊपर अश्रित हैं। इसके बाद पच्चास वर्ष से पचहत्तर वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम होता है। इसमें व्यक्ति परिवार को छोड़कर समाज व राष्ट्र की सेवा निःस्वार्थ भाव से निःशुल्क करता है। इस आश्रम में अपनी धर्म–पत्नी साथ भी रख सकता है और पत्नी को अपने बच्चों के साथ छोड़कर अकेला भी वानप्रस्थी बन सकता है। इसमें व्यक्ति को जितनी भी सामाजिक संस्थाएँ हैं, जैसे गऊशाला, अनाथालय, गुरुकल तथा आर्य समाज मन्दिर आदि, इनमें बिना कुछ लिए केवल भोजन पर सेवा करने का विधान है। इस आश्रम में बहुत कम व्यक्ति जा रहे हैं। यदि सभी, गृहस्थी, वानप्रस्थी बनने लग जाएँ तो समाज की सभी संस्थाएँ सुचारु रूप से चलने लगें और समाज व राष्ट्र बहुत उन्नति व समृद्धि करने लगे।

चौथा आश्रम सन्यास आश्रम है। इसकी अवधि पचहत्तर वर्ष से एक सौ वर्ष तक की तथा सौ से जितना अधिक तक जीएँ तब तक की है। इस आश्रम में मनुष्य किसी एक परिवार, समाज व राष्ट्र में बन्ध कर नहीं रहता, वह विश्व के सभी लोगों के लिए पिता के समान बन जाता है। उसके लिए सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है और सब लोग उसके पुत्र व पुत्रियों के समान है। संसार के सभी दुःख–सुख उस सन्यासी के दुःख–सुख बन जाते हैं पर वह सभी दुःख–सुखों से ऊपर उठ जाता है। उसका मुख्य कार्य बन जाता है कि वह परिवारों में जाकर सभी सदस्यों को वेदों की शिक्षा देकर उनके जीवन को सुखी बनावे। इसके बदले में वह उस परिवार में भोजन कर ले और इसी प्रकार उसका जीवन मृत्यु पर्यन्त चलता रहे।

वर्ण व्यवस्था में मैं लिखना भूल गया कि यह व्यवस्था एक कार्य विभाजन है। जैसे किसी व्यक्ति को भोजन खिलाते समय कई व्यक्ति उनको भोजन खिलाते हैं। कोई हल्वा परोसता है तो कोई पूड़ी, कोई साग, कोई नमक और कोई पानी देता है। भोजन खिलाने के बाद सब मिलकर भोजन करते है। उनमें कोई छोटा–बड़ा नहीं है। यही बात वर्ण व्यवस्था में है। इसे भी कार्य विभाजन ही समझें।

इस प्रकार चारो वर्णाश्रमों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। सुधी पाठक इसे जान इससे लाभ उठाएँ तभी मेरा परिश्रम सफल होगा।

गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स,
180 (दो तल्ला) कोलकता– 700007
मो. 9830135794

☞ पृष्ठ 08 का शेष

स्वामी दयानन्द ...

शुद्धिः

मुसलमानों और ईसाईयों के इस देश में आगमन के पश्चात् यहाँ के मूल निवासियों को बलात् मुसलमान तथा ईसाई बनाने का जो क्रम आरम्भ हुआ, उससे जाति की बहुत हानि हो रही थी। स्वामी जी ने ऐसे लोगों को पुनः अपने माता–पिता की गोद में लौटाने का निर्णय लिया। इससे जाति को नया बल मिला।

स्वाधीनता का प्रश्नः

स्वामी जी स्वाधीनता के सच्चे अर्थों में पुजारी थे। वह सुराज्य को स्वदेशी राज्य का स्थानापन्न स्वीकार नहीं करते थे। उनका मानना था कि एक सर्वोत्तम विदेशी सरकार भी घटिया प्रकार की स्वदेशी सरकार से कभी भी अच्छी नहीं हो सकती। वह पूर्ण स्वाधीनता के पक्षधर थे।

मान्यताएँः

स्वामी जी वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। वह ईश्वर को यद्यपि सर्वशक्तिमान मानते हुए निराकार मानते थे। त्रैतवाद के पक्षधर स्वामी जी यज्ञ को अत्यन्त उत्तम बताते हुए इसे प्रतिदिन करने के लिए प्रेरित करते थे। वह जातिवाद के पक्ष में न होकर वर्णाश्रम व्यवस्था को पसन्द करते थे। स्वामी जी का पुनर्जन्म में विश्वास था। वह तिलक, जनेउ आदि को धर्म का केवल बाहरी स्वरूप मानते थे किन्तु इसे धर्म नहीं मानते थे। अन्धविश्वास व कुरीतियों से बचने के लिए प्रेरणा देते थे। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता इस कारण ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता। वह वेद आधारित उपनिषद्, ब्राह्मण, अरण्यक, स्मृति तथा सूत्र ग्रन्थों को आर्ष ग्रन्थ मानते थे तथा इनका पढ़ना आवश्यक मानते थे। स्वामी जी जादू, टोना, चमत्कार तीर्थ आदि के पक्ष में न थे। जीवित माता–पिता की श्राद्ध अर्थात् श्राद्ध के पक्षधर थे किन्तु मृतक श्राद्ध को पसन्द न करते थे। स्वामी जी मुहुर्त पर भी विश्वास नहीं करते थे तथा सुखी जीवन को स्वर्ग तथा दुःखी जीवन को नरक मानते थे। शाकाहारी भोजन के पक्ष में थे राशिफल तथा फलित ज्योतिष को न मानते थे।

इस कारण इन स्वार्थियों ने स्वामी जी को अपने मार्ग से हटाने के लिए अनेक बार विष दिया, पत्थर उनके ऊपर फेंके गये किन्तु स्वामी जी ने कभी चिन्ता न की और निरन्तर समाज के कल्याण के कार्य करते रहे। अन्त में यह विष ही उनकी मृत्यु का कारण बना, जो दूध में मिलाकर दिया गया और इसके प्रभाव से स्वामी जी सन् 1883 की दीपावली के दिन अजमेर नगर में इस संसार को छोड़कर विदा हुए।

पाकेट 1 प्लाट 61/1 रामप्रस्थ ग्रीन से. 7
वैशाली गाजियाबाद उ.प्र. भारत
मो. 09354745426

पत्र/कविता

महान युग निर्माता-महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋषि दयानन्द के, याद करो उपकार।
पावन वैदिक धर्म निभाओ, यदि चाहो उद्धार।।
अज्ञान, अविद्या, अंधकार, सारी दुनियाँ में छाया था।
वेद विरोधी नास्तिकों ने अति उत्पात मचाया था।।
यवन ईसाई विधर्मियों ने, जग को नर्क बनाया था।
रक्षक-भक्षक बने हुए थे, धर्म-कर्म बिसराया था।।
खाओ-पीओ, मौज उड़ाओ, कहते थे गददार।
ऋषि दयानन्द के याद करो उपकार।।
नारी को पैरों की जूती, ढोंगी पोप बताते थे।
नारी तो है द्वार नर्क का, दुनियाँ को बहकाते थे।।
ढोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी को पीटो चिल्लाते थे।
छुआछात का जोर यहाँ था, निर्धन कष्ट उठाते थे।।
गौ माताओं की गर्दन पर, चलती थी तलवार।
ऋषि दयानन्द के याद करो उपकार।।
जगदीश्वर ने कृपा की, ऋषि देव दयानन्द भेज दिया।
जग हितकारी योगी ने, वेदों का था प्रचार किया।।
कर्म प्रधान बताया ऋषि ने, सोया जगत जगाया था।
विष के प्याले पीकर जग को, वेदामृत पिलाया था।।
गौ, नारी है पूज्य जगत में, ऋषि के थे उद्गार।
ऋषि दयानन्द के, याद करो उपकार।।
बाल विवाह, अनमेल विवाह, योगी ने बन्द कराए थे।
पराधीनता पाप जगत में, नर-नारी समझाए थे।।
जड़ पूजा है नाश निशानी, ऋषि ने साफ बताया था।
मात-पिता, आचार्य, अतिथि देव हैं, पाठ पढ़ाया था।।
सच्चे ईश्वर, भक्त बनो सब, ऋषि का था प्रचार।
ऋषि दयानन्द के, याद करो उपकार।।
आर्य कुमारो, अंगड़ाई लो, उठो, बढो कुछ काम करो।
पावन वेद प्रचार करो तुम, वीरो! जग में नाम करो।।
मेल करो आपस में प्यारों! जग में धूम मचाओ तुम।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, वैदिक नाद बजाओ तुम।।
"नन्दलाल निर्भय" दुष्टों का, कर दो तुम संहार।
ऋषि दयानन्द के याद करो उपकार।।

पण्डित नन्दलाल निर्भय
आर्य सदन बहीन, पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845774

भारत को पटेल जैसा 'लौह पुरुष' चाहिये....

भारत की बर्बादी तक जंग रहेगी जारी और भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशाअल्लाह इंशा अल्लाह आदि आदि के नारे लगा कर देश को ललकारने वाले तत्त्वों ने राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाये रखने के लिये स्व. सरदार पटेल की आत्मा को अवश्य पीड़ित किया होगा? सरदार वल्लभ भाई पटेल की दूरदर्शी सोच व कुशल शासकीय क्षमता का ही परिणाम था जिससे छोटे-छोटे राज्यों को एक साथ मिला कर एक सशक्त राष्ट्र के रूप में भारत का निर्माण हुआ था। ध्यान रहे राजाओं व नबावों के स्वामित्व वाले लगभग 564 राज्यों का एकीकरण करने की जटिल प्रक्रिया में सरदार पटेल की अदभुत भूमिका ने उनको भारत का "लौह पुरुष" बना दिया।

अधिकांश भारतीय समाज को देश के विभाजन की अनेक हिन्दू-मुस्लिम जटिलताओं का पूर्णतः ज्ञान सम्भवतः न हो इसलिए यह स्मरण आवश्यक है कि सरदार पटेल के दूरदर्शी व साहसिक निर्णयों के कारण ही केवल एक पाकिस्तान बना नहीं तो अंग्रेजों ने तो ऐसी स्थिति बना दी थी कि हमारे बीच में ही अनेक घोषित पाकिस्तान बन जाते। इसलिए भी सरदार पटेल को "लौह पुरुष" कहा जाता है। यहां यह लिखना अनुचित नही होगा कि धार्मिक व सांस्कृतिक आधार को छोड़ दिया जाय तो भारत का राजनैतिक दृष्टि से सम्भवतः सम्राट अशोक के काल के अतिरिक्त कभी भी इतना विशाल स्वरूप नहीं रहा होगा?

वर्तमान परिस्थितियों में जब देशद्रोही शक्तियाँ भारत को खंड-खंड करने की तुच्छ मानसिकता का परिचय देने का दुःसाहस कर रही हो तो राष्ट्र को अखंड रखने के लिये सरदार पटेल की कार्यशैली और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। भारत के सन 1947 के धर्माधारित विभाजन के पश्चात भी अनेक भारत विरोधी देशी-विदेशी शक्तियाँ देश को और अधिक विभाजित करने के अवसरों को ढूढने में अभी तक सफल नहीं हो पा रही है। यह अत्यंत दुःखद है कि आज देश की स्वतंत्रता के 70 वर्ष पश्चात भी हम सशक्त व कुशल राजनैतिक व प्रशासकीय नेतृत्व के अभाव में लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के दुष्परिणामों को झेलने के लिये विवश हैं।

हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का इतना अधिक दुरुपयोग हो रहा है कि राष्ट्रद्रोही भावनाओं को भड़काने वाले तत्व प्रभावी होते जा रहे हैं। क्या यह अनुचित नही कि शत्रु देश पाकिस्तान के पक्ष में नारे लगाना, उसका झण्डा लहराना एवं देश के टुकड़े-टुकड़े करके उसकी बर्बादी तक जंग को जारी रखने वालों पर शासकीय तंत्र कोई अंकुश न लगा सका, क्यों? आपको ज्ञात ही होगा कि देश की राजधानी नई दिल्ली में स्थित जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी में कुछ अराष्ट्रीय तत्व वर्षों से सक्रिय हैं। लेकिन लगभग ढाई वर्ष (फरवरी 2016) पूर्व "भारत की बर्बादी" जैसे चीखते व चुभते नारों ने राष्ट्रीय मानस को स्तब्ध कर दिया था।

क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ यह होता है कि अपनी ही मातृभूमि के विरुद्ध षडयन्त्रकारियों को उत्साहित करके उनकी योजनाओं को सफल करने में सहायक बनें? क्या अर्थ व अन्य लोभ-लालच वश देश-विदेश के द्रोहियों का समर्थन करके विश्वासघाती बनना अपराध नहीं? क्या विश्व के किसी भी देश में ऐसे विश्वासघातियों को जो राष्ट्र को खंड-खंड करने के दुःस्वप्न देखते हों, को बंधक बनाने के स्थान पर विभिन्न मचों पर सम्मानित होना स्वीकार होगा?

ऐसे में शासकीय शिथिलता व कठोर निर्णायक क्षमता के अभाव में ऐसे तत्वों का दुःसाहस इतना अधिक बढ़ गया कि वे हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को ही स्व. राजीव गांधी के समान लक्ष्य बनाकर षड्यंत्र करने की सोचने लगे। पिछले माह आये ऐसे अनेक समाचारों से यह विदित हुआ है कि माओवादियों की देशद्रोही वैचारिक पृष्ठ भूमि की जड़ें कितनी गहरी हो चुकी है। इनके साथियों में न जाने कितने वरिष्ठ बुद्धिजीवियों के नामों ने तो आश्चर्यचकित ही कर दिया। इन तथाकथित बुद्धिजीवियों पर जब संदेह की दृष्टि से प्रशासकीय कार्यवाही की गयी तो अनेक पत्रकार, बुद्धिजीवी, अधिवक्तागण एवम राजनेता आदि एकाएक इनके पक्ष में खड़े हो गये और वैधानिक प्रक्रिया को प्रभावित किया।

प्रायः अनेक अवसरों पर जब भी आतंकवादियों, अलगाववादियों, घुसपैठियों व अन्य देशद्रोही मानसिकता वालों के विरुद्ध कोई कठोर कार्यवाही होती है तो ऐसे तत्वों की संदिग्ध सक्रियता बढ़ जाती है। ऐसी विकट स्थिति में जब राष्ट्रीय संप्रभुता पर संकट मंडराने लगे तो उसे कैसे थामा जाय? क्या भारत विरोधी शक्तियां इनती अधिक सशक्त है कि वे हमारे प्रबुद्ध माने जाने वाले वर्ग में स्वदेश के प्रति नकारात्मक भावनाएँ भरने में सफल हो जाते है? जिस कारण वे समय समय पर आन्दोलित होते रहते और भारतीय लोकतंत्र को प्रभावित करते आ रहे हैं। ऐसे में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षार्थ अराष्ट्रीय मानसिकता वाले विभिन्न संदिग्ध वर्गों पर अंकुश लगना ही चाहिये।

अतः ऐसी विपरीत अवस्था में आज हमको सरदार पटेल जैसे कठोर प्रशासक व नेतृत्व की महती आवश्यकता है। हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था, जहां चुनावों में विजयी होने वाले राजनैतिक दल द्वारा ही सरकार गठित होती है, में क्या ऐसी सामर्थ है कि वह एक ऐसा प्रभावशाली राजनैतिक नेतृत्व प्रदान करें जो राष्ट्रविरोधी तत्वों व अन्य शत्रुओं पर दृढ़ता से प्रहार कर सकें? क्या देश की वर्तमान परिस्थितियों में कोई ऐसा नायक मिलेगा जो सरदार पटेल जैसी "लौह पुरुष" की भूमिका निभा सके?

इतिहास में वही शासक सफल माने गये है जो राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान कर कठोर व कड़वें निर्णयों के साथ आगे बढ़े थे। कुछ ऐसी ही संभावनाओं को ढूंढने के लिये सरदार वल्लभ भाई पटेल की गुजरात (साधुबेट- नर्मदा जिला) में 182 मीटर ऊंची विशाल प्रतिमा "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" का 31 अक्टूबर 2018 (144 वीं जयंती) को हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अनावरण करके उस महापुरुष को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ ही करोड़ों भारतवासियों को सकारात्मक संदेश देना चाहेंगे। यह भी एक संयोग है कि इस विशालकाय प्रतिमा का शिलान्यास भी श्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के मुख्य मन्त्री के रूप में सरदार पटेल की जन्म तिथि 31 अक्टूबर को ही 5 वर्ष पूर्व किया था।

इस विशालकाय प्रतिमा का निर्माण मुख्यतः भारत के कोने कोने से लाये गये लोहे व मिट्टी से किया गया है। जिससे हम सबको एक स्पष्ट संदेश भी मिलता है कि सहस्त्रों वर्ष प्राचीन हमारी संस्कृति का भारत को एकजुट करने व रखने में सर्वश्रेष्ठ योगदान रहा और रहेगा। इस शाश्वत सत्य को समझने और उसे धरातल पर स्थापित करके "भारत" का निर्माण करने वाले सरदार पटेल के महान व्यक्तित्व व कृतित्व के अनुरूप आज हमको एक और "लौहपुरुष" चाहिये। आज हम सब भारतवासियों का यह दायित्व है कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति समर्पित लौह पुरुष सरदार पटेल को अपनी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह उदघोष अवश्य करें कि "भारत अखंड, अजेय और अमर रहें।"

विनोद कुमार सर्वोदय
guptavinod038gmail.com

आर.बी. डी.ए.वी. बठिंडा द्वारा भजन प्रतियोगिता का आयोजन

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सी. सें मॉडल स्कूल अबोहर की जूनियर व सीनियर भजन गायन टीम ने बठिंडा में आयोजित भजन गायन प्रतिस्पर्धा में दोनों द्वितीय पुरस्कार जीत कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा व पाठ्य सहायक गतिविधियों की प्रभारी श्रीमती आदर्श जैन ने बताया कि महात्मा आनंद स्वामी जी की पुण्य तिथि के अवसर पर आर बी डी.ए.वी. सी. सै. स्कूल बठिंडा द्वारा भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय की जूनियर व सीनियर

भजन गायन टीमों ने भाग लिया व दोनों वर्गों में द्वितीय स्थान प्राप्त कर ओवर आल रनर अप ट्राफी पर भी कब्जा जमाया है।

जूनियर टीम में कु. गौतमी, सीरत, भव्या, नव्या, त्रिमणजोत, मा. अभिनव, कार्तिक, गीतेश व हरमेहर शामिल रहे।

सीनियर टीम में कु. निहारिका, जसनूर, गुरनूर, सपनप्रीत कौर, हरमनिन्द्र, कीरत, जय चौधरी, अंशिका, प्रीतिका, मनमोहन सिंह व आरिष शामिल रहे।

प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में आज दोनों टीमों के प्रतिभागियों को प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा, सुपरवाइजर श्रीमती सुनीता सहगल, श्रीमती मंजू डोडा, टीम प्रभारी श्रीमती आदर्श जैन, अल्का सतीजा, नीरज शर्मा, सुनीता सचदेवा, आदर्श भुटानी, किरन बाला संगीत शिक्षक दिलीप माथुर द्वारा सम्मानित किया गया व प्रतिभागियों को बधाई देते उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

डी.ए.वी. अमृतसर में महात्मा आनन्द स्वामी जी की जन्मशती आयोजित

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल लॉरेंस रोड, अमृतसर में महात्मा आनंद स्वामी के जन्म दिवस के मौके पर विशेष सभा आयोजित की गई। वर्ल्ड फूड डे भी मनाया गया। डी. ए. वी आन्दोलन और आर्य समाज के सबसे मजबूत स्तम्भ आनंद स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी गई। वे एक समाज सुधारक व सामाजिक बदलावों के लिए भी प्रसिद्ध हैं। वे महान स्वतंत्रता सेनानी थे, अध्यापकों व विद्यार्थियों ने इस महान आत्मा को नमन किया। उन्होंने महात्मा जी के जीवन

के संस्मरणों को सबे साथ सांझा किया। स्वामी जी ने **'डेली मिलाप'** समाचार पत्र चलाया जो कि आज भी चल रहा है और उन्होंने मानवता के लिए प्यार, व भाईचारे का संदेश दिया।

रीजनल ऑफिसर पंजाब ज़ोन ए डॉ (श्रीमती) नीलम कामरा जी और स्कूल के मैनेजर डॉ. राजेश कुमार प्रि. डी. ए. वी. कॉलेज, हाथी गेट, अमृतसर ने ऐसे महान दिनों को श्रद्धापूर्वक मनाने के जज़्बे की प्रशंसा की। उन्होंने विद्यार्थियों को महात्मा जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए सामाजिक भलाई के कार्यों को करते रहने की शिक्षा दी।

स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. (श्रीमती) नीरा शर्मा जी ने माहात्मा जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि ऐसे मनुष्य सम्पूर्ण मानव जाति पर अपनी छाप छोड़ देते है।

आर्य समाज अलवर में एक मासीय कार्तिक यज्ञ

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर पिछले 28 वर्षो से एक मासीय कार्तिक यज्ञ चला आ रहा है।

24 अक्टूबर 2018 से 23 नवम्बर 2018 तक यज्ञ प्रातः 6.45 से 8.00 बजे तक आयोजित किया जा रहा है।

इस आयोजन में दैनिक यजुर्वेद के 15 वेद मंत्रों का पाठ एवं उनकी व्याख्या की जाती है। दिनांक 27 अक्टूबर 2018 को यजमान के रूप में श्री प्रदीप

कुमार आर्य, श्री राज हंस शर्मा, श्री बी.डी. गुप्ता सपत्नी के यज्ञ में शामिल हुए।

यज्ञ पुरोहित एवं यज्ञ के ब्रह्मा पं. शिव कुमार कौशिक एवं प्रोफेसर डॉ. योगेन्द्र धामा द्वारा वैदिक रीति से दैनिक यज्ञ सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर सर्वश्री पं. अमर मुनि, बृजेन्द्र देव आर्य, सत्यपाल आर्य, इन्द्रा आर्य, सुमन आर्य, राजबाला, सुमित्रा शर्मा, लीलावती लोहिया, रेनू , वन्दना, सुरेश गुप्ता, मंजू आर्य आदि बड़ी संख्या में आर्य समाजी लोग उपस्थित हुए।

एक वर्षीय 'अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र' का समापन समारोह

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत, हरियाणा द्वारा आयोजित "अद्भूत अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र" का शुभारम्भ स्मृतिशेष पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, रोजड़, गुजरात की प्रेरणा व निर्देशन में माननीय कैप्टन श्री अभिमन्यु जी, वित्त मंत्री, हरियाणा सरकार के सानिध्य में 1.10.2017 से 30.9.2018 तक यह आयोजन चलता रहा। प्रभु की असीम कृपा एवं सहाय से तथा यज्ञ प्रेमी महानुभावों के सहयोग व आशीर्वाद से यह संभव हो सका। दिनांक 30.9.2018 को समापन समारोह की अध्यक्षता आदरणीय महामहिम डॉ. देवव्रत आचार्य जी, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश ने की और अपने सारगर्भित उद्बोधन से श्रोताओं का मार्गदर्शन कर पर्यावरण की रक्षा हेतु यज्ञ की महता का विस्तृत वर्णन किया। और न्यास को 2 लाख रुपये का आर्थिक सहयोग करने की घोषणा भी की। इस अवसर पर अपना आशीर्वाद देने माननीय मुख्य अतिथि रूप में पधारे डॉ. सत्यपाल सिंह आर्य, मंत्री भारत सरकार ने यज्ञ की विशेषताओं पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश चन्द्र जी, आर्य प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री सुरेन्द्र आर्य जी, चेयरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप डॉ. विनय विद्यालंकार, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड, आचार्य श्री सत्यजित जी एवं आचार्य श्री संदीप जी रोजड़ गुजरात, आदि–आदि ने भी समापन समारोह में पधार कर यज्ञ व पर्यावरण के विषय में जानकारी दी व न्यास की भूरि–भूरि प्रशंसा भी की। डॉ. विनय विद्यालंकार ने मंच का सफल संचालन कर समारोह को सम्पन्न करवाया। श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, प्रधान ने 1 लाख 51 हजार रुपये का दान दिया।

समारोह की सभी प्रकार की व्यवस्था गांव बसई (गुरुग्राम) की ओर से लगभग 4 लाख रूपये से की गई। एवं आमंत्रित महानुभावों व विद्वानों का सम्मान भी किया। न्यास अध्यक्ष महात्मा वेदपाल आर्य ने सभी आमंत्रित महानुभावों, विद्वानों, भिन्न–भिन्न स्थानों से पधारे यज्ञ प्रेमी श्रद्धालुओं, गांव बसई के निवासियों, आर्यसमाज बसई के अधिकारियों व सदस्यों का धन्यवाद व आभार प्रकट किया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 31-10-2018 & 01-11-2018

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल में जीता पुरस्कार

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालंधर के जर्नलिज्म एंड मॉस कम्यूनिकेशन के विद्यार्थियों को लखनउ में आयोजित इंटरनेशनल साईंस लिटरेचर एंड फिल्म फेस्टीवल में फिल्म 'अन्नदाता' को स्पेशल जूरी अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। यह सम्मान केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन और ऑस्कर अवार्ड फिल्म मेकर माइक पांडे ने डायरेक्टर रौशन यादव, अभिलक्ष्य खन्ना, विवेक थापा, अमन, आशिष, अभिषेक, शीतल और भाविका सलूजा को दिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, यूपी के राज्यपाल रामनाईक और केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने किया था। पुरस्कार जीतकर लौटने पर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. राकेश महाजन,

रजिस्ट्रार डॉ. सुषमा आर्य, डीन डॉ. देशबंधु गुप्ता और डीन स्टूडेंट वेल्फेयर डॉ. जसबीर ऋषि ने अपनी शुभकामनाएं दीं। वीसी डॉ. महाजन ने कहा कि मीडिया के विद्यार्थियों ने अंर्तराष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल में पुरस्कार जीतकर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। इन्होंने बड़े संजीदगी से किसानों के जीवन को डक्यूमेंटरी के माध्यम से दिखाया है, जिसको देखकर दूसरे किसान भी प्रेरणा लेगें। रजिस्ट्रार डॉ. आर्य ने कहा कि विद्यार्थियों और प्राध्यापको की मेहनत रंग लाई है, देश में किसानों की दशा काफी ही शोचनीय है ऐसे में इस तरह की फिल्में किसानों को आत्मनिर्भर बनने व आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगें। विभागाध्यक्ष गीता कश्यप, प्राध्यापक प्रो. हरि के. सिंह, विकाश कहोल और रौशन यादव ने विजेताओं को बधाई दिया।

युवा किसानों की कहानी बयां करती है फिल्म अन्नदाता डायरेक्टर रौशन यादव ने बताया कि फिल्म में भारतीय किसानों की जीवनदशा को दिखाया गया है। आये दिन देश व प्रदेश में किसानों की आत्महत्या करने की खबर अखबारों की सुर्खियाँ बनती है। लेकिन उनमें से कुछ ऐसे भी किसान है जो तमाम मुसीबतों और चुनौतियों का सामना करते हुए जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। किसान अब सिर्फ किसानी ही नहीं कर रहे बल्कि अविष्कार भी कर रहे है, जिसका उपयोग कर अपना जीवन खुशहाल बना रहे है।

डी.ए.वी. समाना में विशिष्ट शिक्षा-शास्त्रियों एवं समाज सेवियों का सम्मान

अवंतिका (ए ग्रुप ऑफ कंटेम्परेरी आर्टिस्ट एंड इन्टलेक्टुयल्स) के सौजन्य से तथा इस संस्था के नेशनल डायरेक्टर डॉ. आनंद अग्रवाल के निर्देशन में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य पर पंजाब के भिन्न–भिन्न स्कूलों के प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों की गरिमा बढ़ने हेतु उनके श्रेष्ठ कार्यों के लिए अवंतिका डॉ. राधाकृष्णन सम्मान से अलंकृत किया गया। इस समारोह का आयोजन डी.ए.वी स्कूल समाना के विशाल प्रांगण में बड़े ही परम्परागत ढंग से किया गया। इस अवसर पर श्री विजय कुमार (रीजनल अफसर) मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। इस समारोह में विशिष्ट शिक्षाविद सम्मान के लिए चयनित व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न

स्कूलों के प्रधानाचार्य जैसे की डी.ए.वी स्कूल पातड़ाई डी.ए.वी स्कूल पटियाला, डी.ए.वी स्कूल जाखल, डी.ए.वी स्कूल मुनक, स्कॉलर फील्ड स्कूल पटियाला, केंब्रिज ग्लोबल स्कूल रखड़ा, अकालजोत स्कूल खनौरी, पेरेडाइज़ स्कूल घग्गा, अकाल अकेडमी ब्ल्बेहड़ा, गुरु तेग बहादुर स्कूल पातड़ा आदि शामिल थे। डी.ए.वी स्कूल समाना के कर्मठ एवं योग्य प्रधानाचार्य डॉ. मोहनलाल शर्मा भी मुख्य रूप से सम्मानित किए गये, जो की पिछले 25 वर्षों से केवल शिक्षा ही नही समाज सेवा के कार्यो मे भी सदेव अग्रणी रहते है। कार्यक्रम में मौजूद सभी महान प्रतिभा संपन्न शिक्षाविद न केवल शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसा के पात्र हैं अपितु समाज के कल्याण में भी समय–समय पर अपना सहयोग दे रहें हैं। इस अवसर पर कईं प्रसिद्ध समाज सुधारकों को भी सम्मानित किया गया। डी.ए.वी स्कूल समाना के प्रधानाचार्य डॉ. मोहनलाल शर्मा ने वहाँ पधारे गणमान्य अतिथि तथा सभी बुद्धिजीवी शिक्षा शास्त्रियों का हार्दिक अभिनन्दन किया।

शांति पाठ के सस्वर उच्चारण के साथ समारोह का समापन किया गया।

डी.ए.वी. कॉलेज बठिण्डा में कवितोच्चारण व भाषण प्रतियोगिता

डी.ए.वी कॉलेज, बठिण्डा के छात्र भलाई विभाग ने आर्य समाज के संयुक्त सहयोग से बच्चों में सृजनात्मक व मौलिक विकास हेतु कवितोच्चारण प्रतियोगिता व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्रों ने उत्साह से काफी संख्या में इस प्रतियोगिता में भाग लिया व नव्य विविध विषयों पर विचारभिव्यक्त किए।

कवितोच्चारण प्रतियोगिता में करुण (बीएससी भाग तीसरा) ने प्रथम, मुसकान (बी.ए. भाग तीसरा) ने स्वः रचित कविता में दूसरा स्थान अर्जित किया। लविश गर्ग (बी.

काम. भाग दूसरा) ने भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान व आकाशदीप (बी.ए. भाग दूसरा इंगलिश आनर्ज) ने दूसरा स्थान अर्जित किया।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा व उपप्राचार्य प्रो. वरेश गुप्ता व स्टाफ सेक्रेटरी प्रो. महेषेन्द्र जी ने पुरस्कृत छात्रों को बधाई दी। डॉ. संजीव शर्मा ने छात्र भलाई संघ के सयोंजकों प्रो. सतीश ग्रोवर व प्रो. शीशपाल व आर्य समाज कमेटी को इस भव्यायोजन के लिए धन्यवाद किया। साथ ही उन्होनें कहा कि ऐसे आयोजनों से बच्चों में मौलिक प्रतिभा व सृजनात्मक कौशलों का विकास होता है। जो कि शिक्षा के साथ आवश्यक है। डॉ. नीतू पुरोहित, प्रो. मनप्रीत कौर व प्रो सुमेधा ने निर्णायक मंडल की भूमिका का निर्वहन किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**